ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक,
साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

भगत प्रह्लाद अंक

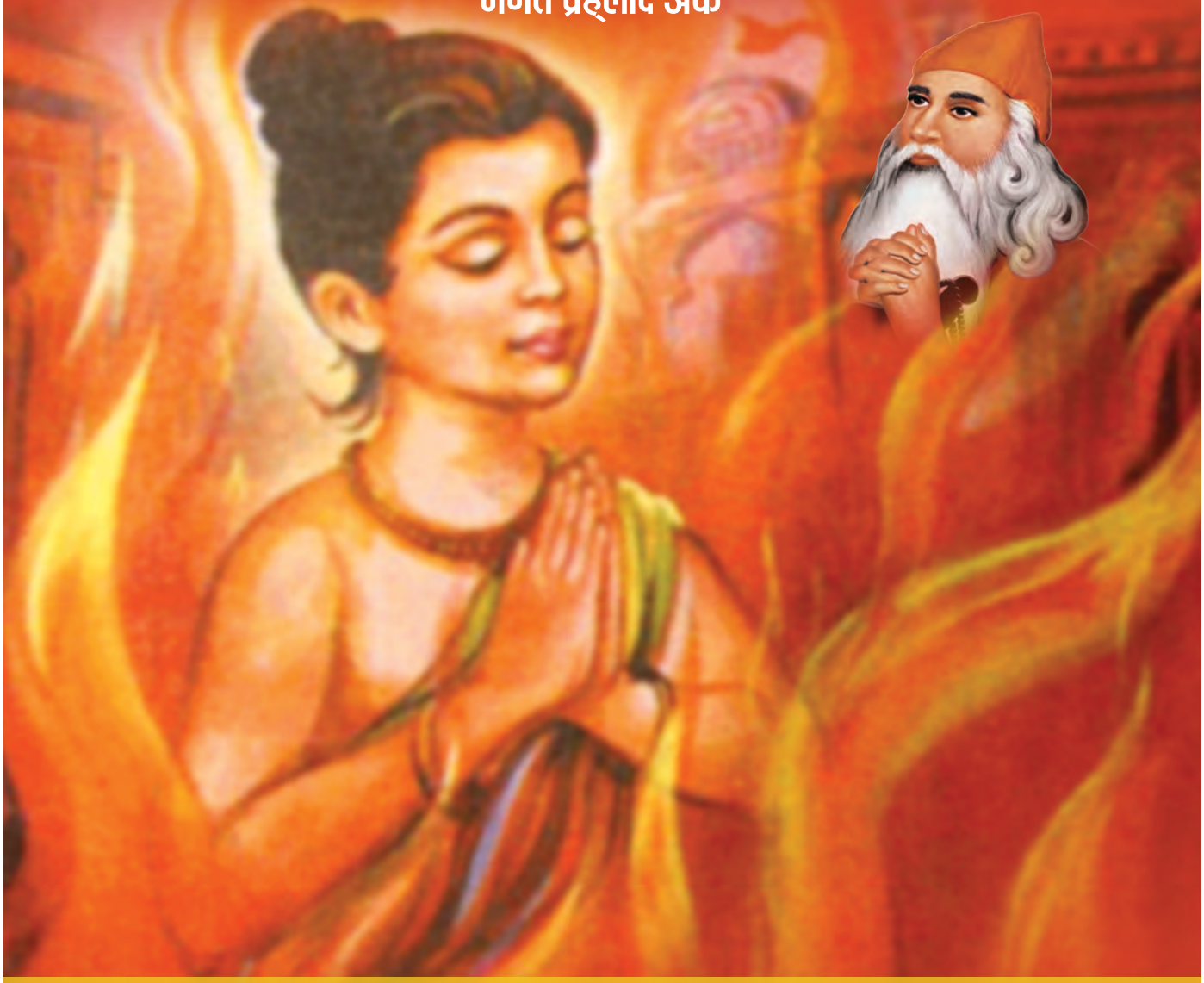

वर्षः 69 अंकः 03 मार्च, 2018

उद्धो जी कृत नरसिंह स्तुति

ब्रह्मा सीव इंद्रादि सुर, प्रसै प्रभु के पाय।
हाथ जोड़ अस्तुती करत, अहौ सुरन के राय।

नमो नरसिंघ म्हा तेजवंत, तिंहु लोक भए भगवान जंत।
नमो नरसिंघ संघारण दैत, नमो नरसिंघ रुप सदा तोहै जैत।।
नमो नरसिंघ भेस नमो सिंघ नाद, तिंहु लौका है मांहिं सुन्यौ तोहिं साद।
नमो सिंघदेव नमो सिंघ राज, भवन चत्रदस सुनी तोहिं गाज।
नमो सिंघ गात नमो सिंघ अंग, नमो सिंघ देह दीरघ उतंग।
नमो सिंघ मुख नमो सिंघ नैन, नमो सिंघ कंध बरणै कुन बैन।।
नमो सिंघ हाथ नमो हरिं पाय, नमो सिंघ पूंछ बरण्यो नहीं जाय।
नमो नरसिंघ जु आद पुरष, हम श्रब देव चले तोह रुख।।
अग्न चंद सूर दुती तौ प्रकास, पांचहु तत मांहिं रहे तम भास।
नमो प्रहलाद हेत अवतार, नमो तुझ नाव लीये भवपार।।
नमो नर लेप नमो नृकार, सुर संतन हेत धरो अवतार।
नमो श्रब व्यापक नमो म्हा विंसन, भक्तन काज धरयौ तन कृसन।।
नमो हरिं भक्त बछल दयाल, हम सरण तोहिं करो प्रितपाल।

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-71	4
सम्पादकीय	7
साखी	8
बिश्नोई पंथ: प्रह्लाद पंथ: प्रमाणिक भी और प्रासंगिक भी	10
भगवान नृसिंह सुजस	13
परम भगवद् भक्त प्रह्लाद	14
कवि हिम्मतराय विरचित प्रह्लाद चरित	16
हरि की भक्ति करे अखंडा, प्रहलाद पंथ चल्यौ नवखंडा	19
परमानन्द प्रह्लाद	22
बधाई सन्देश	23
भक्त प्रह्लाद : एक क्रान्तिकारी प्रेरणात्मक जीवन	24
हठ हरणांकुस हालियो	26
पत राखी प्रहलाद री, बस यह काम हे प्रह्लाद कर, भगतो तारण भगवान	27
नरसिंह अवतार	28
बिश्नोई लोकगीतों में होली	29
सन्त साहब राम जी कृत जंभसार में प्रहलाद चरित्र	31
धर्मरक्षक प्रह्लादपंथी बिश्नोई समाज	34
प्रह्लाद स्तुति छन्द	35
लोक साहित्य: बिश्नोई लोकगीत	36
सामाजिक क्षति: रामसिंह बिश्नोई नहीं रहे	37
मुक्तिधाम मुकाम फाल्गुन मेला 2018	38
जम्भवाणी हरिकथा व युवा सम्मेलन का आयोजन	41
फार्म-4	42

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद-94

दोहा

राव संग भेलो कियो, चल्यो जोधपुर नाथ।
सनमुख देव ने देख के, हृदै आई शांत।
अर्ज करी कर जोड़ के, प्रश्न राव मन मांय।
आदि पुरुष अपनी कहो, किते एक नांव धराय।

जोधपुर से चलकर राव मालदेव ने जब लोहावट की साथरी पर मेल किया तथा देव को जब सन्मुख देखा तो हृदय में शांति का संचार हुआ। फिर हाथ जोड़कर अर्ज करने लगा कि हे देव! मैंने सृष्टि के आदि तथा अन्त तो आपके द्वारा उच्चरित शब्द से जान लिया। अब आगे यह बताइये कि आपके कितने नाम व रूप है। एक ही ईश्वर के कितने रूप और नाम हो सकते हैं। तब श्री देवजी ने सबद उच्चारण किया।

सबद-94

सहंस्र नांम सांई भल शिंम्भू, म्हे उपना आदि मुरारी।
जद म्हे रह्यों निरालंभ होकर, उतपति धंधूकारी।

भावार्थ- सर्व चराचर सृष्टि के स्वामी स्वयंभू परमात्मा के हजारों नाम है। आदि में तो एक नाम रूप वाला होता हुआ भी सृष्टि के विस्तार के समय अनेक नाम रूप धारी हो जाता है तथा वही एक ही सृष्टि के आदि में एक से अनेक हो जाता है। '**एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेय**' और अनेक होकर मुरारी आदि नाम से विख्यात हो जाता है। गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं कि जब हम मुरारी आदि उपाधि धारी सृष्टि रचना करने की अवस्था में नहीं थे अर्थात् हिरण्यगर्भ ब्रह्म में शयन की दशा में थे। जीवों के कर्म शयन कर रहे थे। तब तो वहाँ पर कुछ भी नहीं था, केवल धन्धुकार ही था। ये ज्योति स्वरूप सूर्य, चन्द्र आदि कुछ भी नहीं थे। ये पांचों तत्व भी अपने कारण रूप में लय हो चुके थे। ऐसी दशा में केवल धन्धुकार ही शेष था।

ना मेरे मायन ना मेरे बापन, मैं अपनी काया आप संवारी।
जुग छतीसों शून्य ही वरत्या, सतयुग मांही सिरजी सारी।

उस प्रलय अवस्था में न तो कोई शुद्ध स्वरूप में माता ही थी और न ही पिता ही थे। मैंने अपनी काया अपने आप ही अपनी प्रकृति को वशीभूत करके अपने आप ही बनायी है अर्थात् पूर्व में तो मैं निराकार अवस्था में था किन्तु निराकार से तो सृष्टि रचना का महान कार्य नहीं हो सकता। इसलिये मुझे स्वयं अपने आप ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में अवतरित होना पड़ा। प्रलय होने के पश्चात् तो छतीस युग तो शून्य अवस्था में ही व्यतीत हो गये। कहीं भी कुछ भी जड़-चेतन जीव नजर नहीं आ रहे थे। इन छतीस युगों के बीत जाने पर सर्व प्रथम नयी सृष्टि का निर्माण सतयुग में प्रारम्भ किया और उस प्रारम्भ के एक ही युग में सृष्टि की पूर्ति कर ली।

ब्रह्मा इन्द्र सकल जग थरप्या, दीन्ही करामात केती बारी।
चन्द सूर दोय साक्षी थरप्या, पवन पवने वर पवन अधारी।

उस सृष्टि की सृजना करने के लिये मैं निराकार से साकार रूप विष्णु नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा एक साकार विष्णु के ही ब्रह्मा, महेश दो रूप होकर भिन्न-भिन्न कार्य करने लगे। तत्पश्चात् देवराज इन्द्र तथा अन्य तेतीस कोटि देवताओं की उत्पत्ति हुई। देवताओं के पश्चात् तो सम्पूर्ण सृष्टि ही उत्पन्न हो चुकी। सभी देव दानव मानवों को उन्हें योग्यता के अनुसार बल, गुण आदि करामात देकर भेजा गया था। इस सृष्टि के उत्पति में विशेष रूप से सूर्य, चन्द्रमा को साक्षी बनाकर भेजा। उन्हें सर्व जगत को प्रकाशित करते हुए देखने की सामर्थ्य दी।

यह सूर्य और चन्द्र मानो दोनों ही परमात्मा की ये दो आंखें है। इन्हीं आंखों से वह जगत को देखता है तथा वायु तथा वायु का स्वामी आकाश, जल एवं धरणी, शक्ति सम्पन्ना धरती इन्हीं को यथा स्थान उत्पन्न करके इन्हीं के द्वारा सकल चराचर के प्राणियों के आधार दाता भी वही परमात्मा विष्णु है। उसकी सता से ये आकाशादि टिके हुए है और इन आकाश, वायु, तेज, जल, धरती के उपर सम्पूर्ण सृष्टि टिकी हुई है। इसलिये सभी के आधार स्वरूप वह एक ही परमात्मा विष्णु है।

तद म्हे रूप कियो मैनावतीयो, सत्यव्रत को ज्ञान उचारी।
तद म्हे रूप रच्यो कामठियो, तेतीसां की कोड़ हंकारी।

जब सृष्टि की रचना हो चुकी थी तथा सतयुग का समय था, उस समय ही एक भयंकर प्रलयावस्था आ गई थी। उस समय श्री देवजी कहते हैं कि हमने ही मत्स्य का

रूप धारण करके द्रविड़ देश के राजा सत्यव्रत को आकर दर्शन दिया और उन्हें प्रलयावस्था से सचेत करते हुऐ सृष्टि के समस्त बीजों की रक्षा करने का उपाय बतलाया और स्वयं ही नाव को खींचते हुए उनकी रक्षा की थी। उस प्रलयावस्था में अनेकों वर्षों तक मैं मछली के रूप में नाव खींचता रहा था। उस समय मैनें सत्यव्रत राजा को ज्ञान दिया जो मत्स्य पुराण से प्रसिद्ध हुआ तथा प्रलय समाप्ति पर पुन: सृष्टि के सृजन कार्य को सत्यव्रत के उपर छोड़कर मैं अन्तर्धान हो गया था। सत्यव्रत ही आगे के लिये मनु प्रसिद्ध हुए।

एक समय दानवों ने देवताओं पर विजय प्राप्त करके स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था। उस समय देवताओं को भगवान ने यही सलाह दी कि तुम सभी मिलकर समुद्र मन्थन करके अमृत की प्राप्ति का उद्योग करो। देव-दानवों ने मिलकर वैसा ही किया था। सुमेरू पर्वत की मथाणी जब अपने भार से जमीन में धंसने लगी थी तब देव-दानवों ने मिलकर हरि विष्णु से पुकार की थी तो उनके कार्य की सिद्धि के लिये भगवान ने स्वयं कछुवे का रूप धारण कर उस पर्वत की मथानी के नीचे पीठ लगा दी थी। उन्हें अमृत पान करवाया था तथा उस समय उनके गर्व को चूर-चूर कर दिया था। उन्हें यह बता दिया कि बिना परमात्मा की सहायता के आप लोग किसी भी कार्य में सफल नहीं हो सकते।

जब मैं रूप धर्‌यो बाराही, पृथवी दाढ़ चढ़ाई सारी।
नरसिंघ रूप धर हिरण्यकश्यप मार्‌यो, प्रहलादो रहियों शरण हमारी।

अन्य किसी कल्प में जब सृष्टि की संरचना हुई थी तो सनकादिकों के शाप से भगवान के पोलिये जय और विजय हिरणाक्ष तथा हिरण्यकश्यपु हो गये थे। उनमें से हिरणाक्ष दैत्य ने तो सम्पूर्ण धरती को ही जल में डूबो दिया था जिससे पीछे बची-खुची धरती भी उसर हो गई थी। उसका उपजाऊ भाग जल में डूब जाने से ब्रह्माजी ने विष्णु जी से पुकार की थी तो परमात्मा विष्णु ने वराह रूप धारण करके इस धरती को दाढ़ों पर रख कर जल से बाहर निकाल कर यथा स्थान स्थापित की थी और हिरणाक्ष दैत्य का वध किया था।

उसी समय हिरणाक्ष का दूसरा भाई हिरण्यकश्यपु बड़ा ही क्रोधित हो गया था। वह विष्णु को ही अपना परम शत्रु मानने लग गया था। उस दुष्ट दैत्य का वध भी प्रहलाद की रक्षा के बहाने से नृसिंह रूप धारण करके किया। उस समय भी प्रहलाद भक्त ने श्री देवजी कहते है कि मेरी शरण में आकर राज किया था।

बावन होय बलिराज चितायो, तीन पैण्ड कीवी धर सारी।
परशुराम होय क्षत्रियपन साध्यो, गर्भ न छूटी नारी।

प्रह्लाद का पौत्र राजा बलि स्वर्ग का राज्य प्राप्त करने के लिये यज्ञ कर रहा था। उस समय मैने ही केवल बावन अंगुल का रूप धारण करके उसके यज्ञ में पहुँचा था। बलि की अनधिकार चेष्टा को तीन पैण्ड में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को नाप कर नष्ट किया था। उसे पाताल का स्वामी बनाया था। इसी प्रकार से बलि को सचेत करने वाला भी मैं ही था।

त्रेतायुग में ही सहस्रा बाहु जैसे क्षत्रिय उद्दण्ड हो गये थे। उनकी उद्‌ण्डता मैने परशुराम का रूप धारण करके समाप्त की थी। उस समय मैने भयंकर युद्ध भी किया था तथा तपस्या और माता पिता की आज्ञा पालन बड़ी ही तत्परता से की थी तथा क्षत्रियों का संहार तो ऐसा जबरदस्त किया था जो गर्भ में स्थित क्षत्रिय शिशु को भी नहीं छोड़ा था अर्थात् इस अवतार में तो संहार की अति ही कर दी।

श्रीराम शिर मुकुट बंधायो, सीता के अहंकारी।
कन्हड़ होय कर बंसी बजाई, गऊ चराई।
धरती छेदी काली नाथ्यो, असुर मार किया क्षय कारी।

उसी त्रेतायुग में दशरथ पुत्र राम का रूप धारण करके राजा जनक के यहाँ पर शिव धनुष तोड़कर सीता को अपनी भामिनी बनायी, अपने सिर पर मोड़ बंधवाया यानि विवाह किया क्योंकि सीता-राम की जोड़ी अटल थी, उस जोड़ी को पुन: कायम किया तथा वनवास काल में रावण ने सीता पर अपना अधिकार जमाने के लिये हरण किया। सीता रावण की तो नहीं बन सकी क्योंकि वह तो पहले ही राम की बन चुकी थी। परन्तु सीता ने इस दुष्कर्म का फल रावण के सम्पूर्ण कुल का नाश करवा कर जरूर दिया और श्रीराम ने विभीषण के सिर पर लंका राज्य का मुकुट जरूर बंधवा दिया तथा चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण करके श्रीराम ने भी अयोध्या का राज मुकुट अपने सिर पर बंधवाया।

द्वापर युग में कृष्ण का रूप धारण करके गउवें चराई, बंसी बजाई, गोधन ग्वाल बालों को खेल खिलाकर प्रसन्नचित किया तथा उस समय धरती पर आयी हुई रूकावटों का छेदन किया अर्थात् भारत खण्ड की धरती पर आयी हुई विपतियों का छेदन किया अर्थात् भारत खण्ड की धरती पर दुष्टों का राज्य हो चुका था, जिसमें प्रधानत: कंस, जरासंध, शिशुपाल, भोमासुर और भी अनेक इनके

सहयोगी दानव, बकासुर, पूतना, शकटासुर, वत्सासुर, धेनुकासुर, अरिष्टासुर, केशी, व्योमासुर, चाणुर, मुष्टिक इत्यादि का विनाश करके उनके अधीन धरती को मुक्त करवा कर सभी के लिये सुलभ कर दी थी।

इसी प्रकार से सभी आपसी शत्रुता के कारण एक दूसरे से कट चुके थे। उनकी शत्रुता को मिटा कर पुनः मेल करवाया तथा विशेष रूप से वहाँ पर बहुत बड़े भू भाग को अपने अधीन किये हुए कालिया नाग को उसकी धरती के अन्दर प्रवेश करके नाथ लिया था। उसके फणों पर नृत्य करते हुए उसको अपने वश में करके सदा के लिये वह भू भाग खाली करवा दिया था, जिससे गउवें चर सकती थी। इसी प्रकार से अनेकानेक असुरों को मार करके या उन्हें असुरता से दूर हटा कर यह शुभ कार्य मैंने किया था।

बुद्ध रूप गयासुर मारयो, काफर मार किया बैगारी।
पन्थ चलायो राह दिखायो, नौ बर विजय हुई हमारी।

इसी अवतार परम्परा मैं मैने कृष्ण अवतार के लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पश्चात् कपिलवस्तु नगरी में बुद्ध रूप से अवतार लिया तथा तपस्यामय जीवन व्यतीत करते हुए ज्ञान प्राप्ति के उद्देश्य से भटकते हुए गयाजी में आकर एक वृक्ष के नीचे आसन लगाया था। वहीं पर मैं अधिक समय तक रहा था। वहीं से ज्ञान की ज्योति का अवतरण हुआ और बुद्ध हो गया।

बुद्ध हो जाने के पश्चात् मैने वहाँ उस समय धर्म के नाम पर, देवताओं के नाम पर ब्राह्मणों, याज्ञिकों द्वारा अत्याचार होते देखा। वे लोग सच्चे धर्म को छोड़कर काफिर हो गये थे। नास्तिकता को अपना चुके थे। यज्ञ में पशु बलि की प्रथा डाल चुके थे। स्थूल पूजा को ही महत्त्व देते थे तथा ईश्वर के नाम पर व्यक्ति पूजा का ही बोल-बाला हो गया था। वह पाखण्ड मैने उपदेश शक्ति द्वारा समाप्त किया। उन पण्डितो तथा साधारण जनों से दूषित यज्ञादि कर्म छुड़वाकर ईश्वरीय उपासना में प्रवृत करवाया।

(एक अंगुलीमाल नाम का डाकू उसी जंगल में रहता था। उसे जो भी व्यक्ति मिलता उनकी वह अंगुली काट लेता था, इसलिये उनका नाम भी यही पड़ गया था।एक समय बुद्ध भी उसी के पास से होकर जा रहे थे कि उसने रोक लिया और अंगुली काटने के लिये खड़ग उठा लिया किन्तु बुद्ध के तेजस्वी रूप के सामने वह नत मस्तक हो गया और तलवार फैंक कर उनका शिष्य बन गया) जम्भदेवजी कहते हैं कि मैने उन्हें तथा पाखण्डी लोगों को बेगार बना दिया, उन्हें पापमय मार्ग से हटाकर सद्पंथ के पथिक बना दिया तथा बौद्ध धर्म चलाया और सच्चा मार्ग दिखलाया जो आज भी देश विदेशों में विख्यात है। इसी प्रकार से नौ बार तो हमारी विजय हो चुकी है अर्थात् इन उपर्युक्त नौ अवतारों में तो हमने कार्य सिद्ध कर दिये है। हमें अपने कार्य से कोई भी रोक नहीं सका है तथा-

शेष जम्भराय आप अपरंपर, अवल दिन से कहिये।
जाम्भा गोरख गुरु अपारा, काजी मुल्ला पढ़िया पण्डित, निंदा करै गिंवारा।

उक्त बुद्ध अवतार के लगभग अढ़ाई हजार वर्ष पश्चात् मैं यहाँ पर जम्भराय नाम से स्वयं अपरंपर विष्णु परमात्मा, शेष कार्य को पूरा करने के लिये आया हूँ। वैसे तो मैं प्रथम दिन से ही अर्थात् आदि अनादि से ही निराकार निरंजन उपाधि रहित कहा जाता हूँ। फिर भी सृष्टि के आदि से ही मच्छ कच्छ आदि शरीरधारी मैं साधु पुरुषों की रक्षा करने वाला तथा दुष्टों का विनाश करने वाला भी कहा जाता हूँ।

इसी कलयुग में ही कुछ वर्ष पूर्व योगीन्द्र गोरखनाथ विभूति भी जागृत हुई थी। वे समादरणीय अपार शक्तिशाली गुरु थे, उन्होंने भी बुद्ध की भांति ही सच्चे योग मार्ग का अनुयायी शिष्य वर्ग को बनाया था तथा गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं कि इस समय मैं भी उसी सद्मार्ग का निर्देश देकर शिष्य वर्ग को सद्पंथ का पथिक बना रहा हूँ। इसलिये निकट समय में बुद्ध के पश्चात् हम दोनों ही अपार गुरु की पदवी को धारण करने वाले है किन्तु ये काजी, मुल्ला, पढ़े लिखे पण्डित लोग हमारी निंदा करते है क्योंकि अब हमारे सामने इनका पाखण्ड मिथ्या आचरण चल नहीं पाता है किन्तु हे धर्म प्रेमी जनों।

दोजख छोड़ भिस्त जे चाहो, तो कहिया करो हमारा।
इन्द्र पुरी वैकुण्ठे वासो, तो पावो मोक्ष द्वारा।

यदि आप लोग दोजख यानि दुखमय नरक को छोड़कर सुखमय स्वर्ग को चाहते हैं तो मेरा कहना करो और यदि मेरे कथनानुसार धर्म मार्ग पर चलोगे तो अपने शुभ कर्मानुसार इन्द्र देवलोक तथा वैकुण्ठवास को प्राप्त करके मुक्ति लाभ को प्राप्त करोगे। जन्म-मरण के दुखों से सदा-सदा के लिये छूट जाओगे।

- साभार 'जंभसागर'

सम्पादकीय

पहलाद पथ के पथिक बनें

आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का प्राण है। हमारे यहां अध्यात्म व भक्ति से रहित जीवन रसहीन व निरर्थक माना जाता है। हमारे इतिहास में भी सर्वाधिक आदर के साथ नाम उन्हीं का लिया जाता है जिन्होंने अपना जीवन परमपिता परमात्मा के नाम समर्पित कर दिया था, चाहे वह भक्त प्रह्लाद हो या भक्त ध्रुव। भक्त प्रह्लाद और भक्त ध्रुव आध्यात्मिक जगत के वे उज्ज्वल नक्षत्र हैं जो भक्ति की राह पर चलने वाले हर पथिक का पथ आलोकित करते हैं। भक्ति का मार्ग सीधा सपाट न होकर अनेक अवरोधों से भरा हुआ होता है। आन्तरिक विकारों के साथ-साथ बाहरी अवरोध भी इस पथ के कंकड़ हैं। इस पथ पर चलते हुए कदम-कदम पर ठोकर खाने या रपटने का भय रहता है। यही कारण है कि इस पथ पर चलने वालों को भक्त कवियों ने शूरवीर कहा है। भक्ति मार्ग पर अग्रसर होना कायर का कार्य नहीं है क्योंकि इस राह के हर प्रह्लाद को पग-पग पर हिरण्यकश्यप मिलते हैं।

भक्त प्रह्लाद का उज्ज्वल चरित्र हमें यही सिखाता है कि भक्ति का मार्ग दृढ़ता की मांग करता है। लोभ, लालच, भय, दण्ड आपको डिगाने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं। यदि इन सबसे टकराते हुए आप आगे आसुरी शक्तियों से संघर्ष आज हम सबके लिए एक प्रेरक उदाहरण बन चुका है। आज भी सज्जनों की राह निष्कंटक नहीं है। हमें प्रह्लाद से यह सीखना चाहिए कि विजय सदैव भगवद् भक्ति की ही होती है। यदि भावना निष्कलंक और सच्ची है तो परमात्मा को अवतार लेना ही पड़ेगा। प्रह्लाद के तैंतीस करोड़ अनुयायी हमें यही कह रहे हैं कि हमें सदैव सत्य का ही साथ देना चाहिए, भले ही मृत्यु का सामना करना पड़े।

होली के त्यौहार का सबसे बड़ा संदेश भगवद् भक्ति का है। प्रह्लाद के बचने की खुशी मनाने के साथ-साथ हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम पूर्ण समर्पण के साथ उसी राह पर चलेंगे जिस राह पर चलकर भक्त प्रह्लाद स्वयं मोक्षगामी हुए और तैंतीस करोड़ भक्तों का भी उद्धार किया। खेद है कि आज हम होली के इस अति पवित्र और गंभीर अर्थ को भूलकर होली को केवल हुड़दंग का त्यौहार मान बैठे हैं। होली के अवसर पर एक दूसरे पर कीचड़ फेंकने और शराब पीने का होली से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तो आसुरी प्रवृत्ति का प्रतीक है। फाग के दिन रंग लगाकर आपसी प्रेम और भाइचारे का प्रदर्शन भी अपनी जगह है। पर इस त्यौहार का मूल संदेश तो भगवान विष्णु की दृढ़ भक्ति ही है जिसे हमें हृदय से आत्मसात करना चाहिए। एक जांभाणी कवि के शब्दों में कहें तो होली का संदेश है-

पहलाद बाट थे बहियो, विष्णु-विष्णु ही करता रहियो।

साहबराम जी कृत साखी

नरसिंह नर मुलतान, सतयुग में साको कियो।
मार्‌यो दैत दीवान, पहलाद भक्त गोदी लियो।
पहलाद भक्त गोदी लियो नै, सिरपर दोनूं हाथ।
शिव ब्रह्मा आया सही नै, सुर तेतीसूं साथ।
लिछमी हूं लारै लुकै तूं, मांग वचन पहलाद।
बाड़ै हुता बीछड़्या, आण मिलावो साध।
कर जोड़या ऐसे कही।1।

कह हरि महाराज, दूर पड़ै टोली टलै।
सांसो मत कर साध, चहुं फेरा चोकस मिले।
चहुं फेरा चोकस मिलै नै, चार जांमै जुग चार।
हरिचंद पाण्डू अंस तव, नन्द लोहट अवतार।
पांच सात नव करोड़ बारां, बहुरी मिलेंगे आंण।
नहतंती नर लोक में, आवै जम्भ सजाण।
दुख मेटण मोटो दई।2।

तारयो जिण पहलाद, हिरणाकुश मार्‌यो हरि।
असुरां लागी आंच, देख दुनी सारी डरी।
देख दुनी सारी डरी नै, गहया धर्म उणतीस।
अग्नि की पूजा करो, आय निवावो सीस।
असुर बुध अलगी भई, करे सोच सिनान।
पाहल ले प्रसण भया, अरू मांनै गुरु की आंण।
दिल की दुबध्या सब गई।3।

जब का बिछुड़या जीव, बिन खोजी पावै नहीं।
गया समंदरा तीर, विन लाया आवै नहीं।
विन लाया आवै नहीं नै, कलयुग बहै करूर।
भक्ति हमारी कूण करै, यूं जाण्यो विष्णु जरूर।
महा विष्णु को तप कियो, निरह निरंजण देश।
पहलाद कवल के कारणै, आये जम्भ नरेश।
घट घट व्यापक जम्भ वही।4।

लोहट है नन्दराय, जसोदा हांसा भई।
मरूस्थल है वृज भोम, पींपासर वृज है सही।
पींपासर वृज है सही नै, वचन के प्रति पाल।
कृष्ण कवल के कारणै, गुरु जम्भ लियो अवतार।
सतलोक को छोड़ के, गुरु किया भगवां भेस।
जेठ बदि नौमी दिन, गुरु कियो नन्द उपदेश।
साहब सतगुरु है सही।5।

भावार्थ- भगवान ने मुलतान में नरसिंह अवतार के रूप में बड़ा आश्चर्यजनक रूप धरकर अद्‌भुत कार्य किया है। भगवान ने हिरण्यकश्यपु को उसके दरबार में मारकर प्रह्‌लाद को अपनी गोद में बैठाकर आल्हादित होकर अपने दोनों कर कमल प्रह्‌लाद के सिर पर रखे हैं। तेतीस करोड़ देवताओं को साथ लेकर शिवजी व ब्रह्माजी इस अवसर पर पहुंचे हैं परंतु भगवान का रौद्र रूप देखकर कोई उनके पास जाने का साहस नहीं कर रहा है, लक्ष्मी आदि सभी पीछे छिप रहे हैं। तब भगवान प्रसन्न होकर प्रह्‌लाद से वचन मांगने के लिए कहते हैं। प्रह्‌लाद हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक भगवान से अपने तैतीस करोड़ साथी साधकों को भगवद्‌धाम प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं॥1॥

भगवान श्रीहरि प्रह्‌लाद को आश्वस्त करते हैं कि पांच करोड़ साधक तुम्हारे साथ मुझे प्राप्त होंगे, शेष बचे हुए साधकों में से सात करोड़ त्रेतायुग में राजा हरिश्चन्द्र के साथ, नौ करोड़ द्वापरयुग में पांडु पुत्रों के साथ और बारह करोड़ के लिए कलियुग में मैं स्वयं अवतार लूंगा॥2॥

जिन्होंने हिरण्यकश्यपु को मारकर प्रह्‌लाद को भीषण संकट से उबारा था वही अब श्री जम्भेश्वर अवतार के रूप में आए हैं। असुरों को संताप हुआ है। अधर्म के प्रकोप से दुनिया भयभीत है। व्याकुल लोगों ने उनतीस नियमों को धारण किया है, हवन-यज्ञ करने लगे हैं और भगवान के शरणागत हुए हैं। कुबुद्धि का परित्याग करके जीवन को पवित्र बनाया है। पाहल लेकर प्रसन्नतापूर्वक गुरु की मर्यादा में रहना स्वीकार किया है। सभी संशयों की निवृत्ति हो गई है॥3॥

प्रह्‌लाद की टोली के जो जीव बिछुड़ गए थे उन्हें कोई समर्थ खोजी ही खोज सकता है। धरती के अन्तिम छोर, समुद्र तट तक बिखरे ये जीव स्वयं चलकर नहीं आएंगे, भगवान को इनके पास जाना पड़ेगा। क्रूर कलियुग की हवा बह रही है जो जीवों को पग-पग पर परमात्मा से दूर धकेल रही है। भगवान विष्णु को पता है कि ऐसे दुष्कर समय में मेरी भक्ति कौन करेगा? सम्भराथल पर भगवान स्वयं तप कर रहे हैं। प्रह्‌लाद को दिये वचन के कारण श्री जम्भेश्वर अवतार हुआ है। घट-घट में व्याप्त रहने वाले विष्णु ही जम्भेश्वर है॥4॥

लोहटजी ही नन्दबाबा है, यशोदा ही हंसा है, मरुस्थल ही बृजभूमि और पीपासर ही बृज है। वचन के प्रतिपालन के लिए भगवान का आना हुआ है। वैकुंठ का ऐश्वर्य छोड़कर भगवान ने भगवा वेश धारण किया है। कवि साहबरामजी कहते हैं कि ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी तिथि को गुरु ने नन्द को उपदेश प्रदान किया था॥5॥

साभार- साखी भावार्थ प्रकाश
भावार्थ- विनोद 'जम्भदास'

बिश्नोई पंथ: प्रह्लाद पंथ : प्रमाणिक भी और प्रासंगिक भी

भगवान श्री जाम्भोजी द्वारा स्थापित बिश्नोई पंथ को जाम्भाणी साहित्यकारों ने प्रह्लाद पंथ भी कहा है तथा 'जम्भेश्वर वाणी' में भी कई स्थलों पर स्वयं जाम्भोजी ने भी प्रह्लाद से सम्बन्धित प्रसंगों का उल्लेख किया है। केवल उल्लेख ही नहीं किया बल्कि 'सबदवाणी' का यदि गहन अध्ययन किया जाए तो भक्त प्रह्लाद विषयक गाथा पर ही उनका सम्पूर्ण दर्शन टिका है। भगवान श्री जम्भेश्वर जी जिस हेतु अवतार लेकर पृथ्वी पर आये थे उस कारण की सम्पूर्ण निवारण लीला का आधार ही प्रह्लाद कथा है। परन्तु यह प्रश्न समाज में प्राय: उठता रहता है कि प्रह्लाद कथा जिस प्रकार पुराणों या अन्य धर्मग्रन्थों में वर्णित है। उसमें कहीं भी इस सन्दर्भ के दर्शन नहीं होते जिस सन्दर्भ को (चारों युगों में 33 करोड़ जीवों के उद्धार एवं भगवान नृसिंह द्वारा प्रह्लाद को 33 कोटि जीवों का उद्धार करने का वरदान देने की बात) जाम्भोजी ने प्रस्तुत किया है। इस सन्दर्भ की अन्य कोई मापदण्ड है अथवा नहीं।

उपर्युक्त के सन्दर्भ में वास्तविकता तक पहुंचने के लिए हमें भगवान श्री जम्भेश्वर जी के समग्र जीवन वृत पर सूक्ष्म दृष्टिपात करना होगा। उनके अवतरण समय से पहले की पृष्ठभूमि, उनके अवतरित होने का कारण, उनके उद्‌गार, विचार, व्यवहार आदि जीवन के समस्त क्षेत्रों में हमें वह विलक्षणता परिलक्षित होती है जो उन्हें सामान्य मनुष्यों की श्रेणी से ऊपर उठाकर अवतारी महापुरुष, युगपुरुष, महामानव, दिव्यात्मा की श्रेणी में स्थापित करती है।

भगवान श्री जम्भेश्वर जी का अवतरण ऐसी विषम परिस्थितियों में हुआ, जिनको उनके अवतरण काल से पहले भी भारतीय संस्कृति का इतिहास अन्य अवतारों के अवतरण काल से पूर्व दर्शाता रहा है। मानस में तुलसी का कथन 'जब जब होय धर्म की हानि' गीता का श्लोक **'यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत'**। उस परिवेश को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं जिस परिवेश और परिस्थितियों में उस परम ब्रह्म परमात्मा को सृष्टि व मानवता की रक्षार्थ साकार रूप में अवतरित होना पड़ता है।

भगवान श्री जम्भेश्वर जी ने अपने अवतरित होने का कारण व अपनी अनन्त सामर्थ व शक्ति का स्वयं ही अपनी वाणी में विस्तृत वर्णन किया है वे स्वयं उस स्वयंभू परमात्मा के आदेश व प्रेरणा से पृथ्वी पर अवतरित हुए है **'म्हे शंभू का फरमाया आया'** तथा मैं स्वयं ब्रह्म हूं तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में मैं ही व्याप्त हूं **'रूप-अरूप रमूं पिन्डे-ब्रह्मण्डे, घर घर अघट रहायों'**। मैं अनन्त युगों से अजर अमर हूं, मैं सांसारिक सम्बन्धों से ऊपर हूं। **'अनन्त युगां में अमर भणीजूं ना मेरे पिता न मायों'**। मैं काल की सीमाओं से बाहर हूं, मेरा वर्तमान, भूत, भविष्य कुछ नहीं है। मैं सदैव हूं, सदैव था, सदैव रहूंगा। मैं (छत्तीस युगों) अनन्त काल के रहस्यों से अवगत हूं। **'बात कदो की पूछे लोई जुग छत्तीस विचारूं'**।

मैंने किसी विद्यालय या पाठशाला में शिक्षा ग्रहण न करते हुए भी संसार की समस्त विद्याओं ज्ञान को जान लिया है।

'म्हें सरै न बैठा सीख न पूछी, निरत सुरत सब जाणी'।

मेरा व ब्रह्म का एक ही रूप व सामर्थ्य है-

माय न बाप न मैं अपनी काया आप संवारी'॥

आदि सबदवाणी के उद्धरणों में जाम्भोजी के साकार ब्रह्म होने तथा उनकी अपार शक्ति व सामर्थवान स्पष्ट है। भगवान श्री जम्भेश्वर जी ने सांसारिक मानव को एक अनुपम व विलक्षण जीवन पद्धति प्रदान की है कि जिसमें कायरता, निराशा, अकर्मणयता, अंधविश्वास, अन्धानुकरण, बाह्य आडम्बर युक्त कर्मकांड आदि क्रियाकलापों का किंचित भी समावेश नहीं है। अवतारों देवी देवताओं या अन्य किसी दिव्यात्मा को अपना आराध्य मानकर केवल उसके नाम के जाप, समस्या आदि द्वारा मानव का कल्याण सम्भव नहीं है। जैसा कि भारतीय धर्म दर्शन में सनातन भक्ति पर परमात्मा के अन्तर्गत देखने को मिलता है। श्रीराम के समान आचरण करने वाला

भी पार नहीं हो सकता, जब तक वह श्रीराम के आदर्शों को जीवन में आत्मसात नहीं कर लेता '**श्री राम ज्यों बहुत करै आचांरू तेह पार पहुंता नांही**'। जो व्यक्ति अपने ज्ञान (विवेक द्वारा) व ध्यान (निष्ठा व एकाग्रता) द्वारा (नादे वेदे) वेद के सार को शब्द ब्रह्म द्वारा जान लेता है उसे ही तत्व ज्ञान की प्राप्ति होती है। '**ज्ञाने-ध्याने, नादे-वेदे जे नर लेणा तत ही ताप्ती लीयों**'। उन्होंने बाह्य आडम्बर एवं परम्परागत धर्म व कर्मकांडों को नकारते हुए अनेक उद्धरण अपनी वाणी के द्वारा प्रस्तुत किए हैं विस्तार भय से उनका उल्लेख यहां असंभव है। उपर्युक्त उदाहरण उनके द्वारा प्रतिपादित उपासना पद्धति का स्पष्ट प्रमाण है।

सदियों से चली आ रही अवतरणों, पीर पैगंबरों, देवी देवताओं की पूजा अर्चना के बल पर निर्वाण या मोक्ष प्राप्ति की मान्यता के स्थान पर मनुष्य मात्र को अपनी जीवनचर्या में उनके कृत्यों को जीवन के साथ आत्मसात करके ही लक्ष्य (मोक्ष) प्राप्ति के लिए नवीन व शाश्वत मान्यता की स्थापना की तथा भूमिका स्वरूप भगवान श्री जाम्भोजी ने प्रह्लाद कथा को आधार मानकर उसे चारों युगों से सम्बद्ध करते हुए अपनी नवीन व क्रांतिकारी अवधारणाओं की स्थापना की।

उनकी उपर्युक्त अनन्त सामर्थ व शक्ति तथा उनके अवतरित होने का कारण व उद्देश्य पूर्ति हेतु दिव्यलीलाओं व उपदेश का केन्द्र केवल प्रह्लाद कथा ही है। जो न तो काल्पनिक है और न ही झूठ है क्योंकि '**मैं भूल न भाख्या थूलूं**'। जम्भेश्वर जी का यह कथन कि मैं भूलवश भी कभी (थूल) झूठ नहीं बोलता। कथा की सत्यता को प्रमाणित करता है। प्रह्लाद कथा में आगे नया प्रसंग भगवान श्री जम्भेश्वर जी द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु स्थापित किया गया है जिससे उनके कार्य की अनवरतता बनी रहे।

इस तरह की भूमिका प्रसंग केवल भगवान श्री जम्भेश्वर जी ने ही नहीं अपितु समय-समय अन्य अवतारों, महापुरुषों द्वारा भी नवीन संदर्भों में कही जाती रही है। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध स्थल में युद्ध करने हेतु उत्प्रेरित करने के लिए गीता के उद्देश्य में भी एक नवीन अवधारणा के दर्शन होते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में प्रथम तीन श्लोकों में इस विस्वते योग... एवं परम्परा प्राप्तनिमं... स एवांय भया तेय योग:... अर्जुन से कहा है अर्जुन मैंने इस अविनाशी ज्ञान को पहले सूर्य के प्रति कहा था, सूर्य ने अपने पुत्र मनु से कहा, मनु ने अपने पुत्र इक्षवाकु के प्रति कहा, इस प्रकार से परम्परा से प्राप्त इस योग (ज्ञान) को राजर्षि ने जाना, लेकिन अर्जुन यह ज्ञान बहुत काल से पृथ्वी पर लोप हो गया था उसी दस पुरातन योग (ज्ञान) को अब मैंने तेरे लिए कहा है क्योंकि तू मेरा अनन्य सेवक एवं भक्त है। भगवान श्रीकृष्ण का दिव्य ज्ञान के आदान प्रदान सम्बन्धी यह कथन कहीं अन्यत्र शायद ही धर्म शास्त्रों में वर्णित है। तीनों युगों में भगवान अवतारों से सम्बन्धित एक पौराणिक कथा और प्रचलित है जिसमें भगवान विष्णु के द्वारपाल जय-विजय को शाप देकर चार सन्त कुमारों ने उन्हें राक्षस योनि में जाने को विवश किया। तब उन्होंने प्रार्थना और विनय के साथ सन्त कुमारों से अपने उद्धार का उपाय पूछा। तब उन्होंने चारों युगों में उनके उद्धार हेतु विष्णु भगवान के अवतार लेने की बात कही। यह कथा भी अवतार शृंखला को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए प्राचीन ऋषियों ने कही है जिसका कहीं और उल्लेख नहीं मिलता। इसी तरह से अपने मंतव्य को भगवान श्री जम्भेश्वर जी ने पुरातन काल से सम्बद्ध करने के लिए प्रह्लाद कथा का अवलम्बन लिया जो कि इसी तरह से स्वत: प्रमाणिक व प्रसांगिक है जिस तरह से उपर्युक्त कथाएं हैं।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि जाम्भोजी पुरातन काल में चली आ रही पूजा अर्चना के पक्षधर नहीं हैं। उन्होंने तो कर्म व विचारों के आधार पर अपने आराध्य देव के गुणों, कर्म व स्वभाव को आराधक द्वारा अपने जीवन के साथ पूर्ण रूप से आत्मसात करके आराध्य सध्य जीवन यापन को ही संकट साधना या पूजा प्रार्थना माना है। इसलिए उन्होंने प्रह्लाद कथा को नये रूप में विस्तारित करते हुए अपनी विचारधारा को संसार के समक्ष सशक्त एवं शाश्वत ढंग से रखा है।

उन्होंने प्रह्लाद के पूर्व जीवन तथा उसके पिता द्वारा किये गये दुष्कृत्यों के विस्तार में न जाते हुए केवल उस काल की कथा को आगे बढ़ाया है जिस

समय भगवान नृसिंह ने हिरण्यकश्यप को मारकर प्रह्लाद को वरदान मांगने को कहा है तब प्रह्लाद ने 33 करोड़ प्राणियों के उद्धार को वरदान मांगा। तब भगवान नृसिंह ने जिसे जाम्भोजी (अहं ब्रह्मास्मि के सिद्धान्त द्वारा) अपना ही रूप मानते हैं। **'नर सिंह रूप हिरनाकश्यप मारयो'** प्रह्लाद को वचन दिया **'प्रह्लादा सूं वाचा कीवी'**। उपरान्त में पांच करोड़ प्राणियों का प्रह्लाद के साथ ही उद्धार सतयुग में ही किया तथा प्रह्लाद के उस अद्भुत व कठिन कार्य का उचित प्रतिफल प्रदान किया। **'पांच कोड़ी ले प्रह्लाद उतरियों जिन खरतर करी कमाई'**। प्रह्लाद के द्वारा मांगे गये इस वरदान को संकल्प में परिणत करते हुए उन्होंने इस महान कार्य को बांटकर खण्ड रूप में करने की योजना बनाई **'पहलू प्रह्लादा आप लियो दूजा काजै काम बट लीयो'**। इस महान काम को चारों युगों में अलग-अलग संख्या में प्राणियों का उद्धार किया। त्रेता में सात करोड़ प्राणियों का राजा हरिश्चन्द्र के साथ उद्धार हुआ **'सात करोड़ी ले हरिश्चन्द्र उतरियो'** तथा द्वापर में महाराज युधिष्ठिर के साथ नौ करोड़ लोगों का उद्धार हुआ **'नव क्रोड़ी ले राव युधिष्ठिर उतरियो'**, इसके उपरान्त भगवान श्री जम्भेश्वर जी स्वयं शेष रहे 12 करोड़ प्राणियों के उद्धार हेतु अपने अवतार का कारण बताते हुए कहते हैं (बारह कोटि समाहन आयो) कि बारह करोड़ जीवों के उद्धार हेतु मैंने पृथ्वी तल पर अवतार लिया। इस कलिकाल में यह एक संभव व दुष्कर कार्य है परन्तु मुझे बारह कोटि जीवों का उद्धार प्रह्लाद के वचनानुसार अवश्य करना है। **'प्रहलादा सूं वाचा कीवी आयो वारह काजै'**। यदि उपर्युक्त योजना के अन्तर्गत वारह कोटि जीवों में से एक भी कम हो गया तो एक सुयोग्य शिष्य (प्रह्लाद) के समक्ष गुरु (जाम्भोजी) की स्थिति लज्जास्पद हो जाएगी। अत: यह कार्य अवश्य करना है। **'बारा में से एक घटे तो सुचेलों गुरु लाजै'**।

सबदवाणी के उपर्युक्त कथन इस बात की पुष्टि कर रहे हैं कि भगवान श्री जम्भेश्वर जी ने अवतार क्यों लिया। उनको भूलोक में क्यों आना पड़ा तथा किस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उन्होंने लगभग पिचासी वर्ष तक मृत्यु लोक में अपनी लीला दिखाई। प्रह्लाद कथा की नवीन रूप में प्रस्तुति भगवान श्री जाम्भोजी के एक और मंतव्य को प्रकट करती है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि वे स्वयं साकार ब्रह्म हैं तथा समस्त जीवन जगत (मानव जगत) को भी ब्रह्म का स्वरूप ही मानते हैं। **'अलख अलख तू अलख'** कहकर जाम्भोजी ने प्रत्येक प्राणी को ईश्वर का प्रतिरूप ही माना है। अत: जीवन रूप में हमें ईश्वर तुल्य या ईश्वर द्वारा निर्धारित सुकर्म ही करने चाहिए तथा उसी की आराधना पूजा अर्चना परम्परागत दिखावे युक्त कर्मकाण्डों से न करते हुए उसी के गुण कर्म स्वभाव के अनुरूप अपने जीवन को बना लेना ही जीव (मानव) की सबसे बड़ी उपलब्धि है। यह जाम्भोजी की सबदवाणी का दर्शनसार है। **'विष्णु ही मन विष्णु भणियों, विष्णु ही मन विष्णु रहियों'** कथन इस बात का द्योतक है कि विष्णु (ब्रह्म) की उपासना मानसिक रूप से करते हुए स्वयं को विष्णु स्वरूप में स्थापित करना तथा विष्णु के गुण कर्म स्वभाव को जीवन में अपनाना ही सच्ची साधना व पूजा है।

सारांशत: यह कहा जा सकता है कि प्रह्लाद की कथा में भगवान श्री जाम्भोजी द्वारा कहा गया प्रसंग स्वत: प्रमाण है तथा भगवान श्री जम्भेश्वर जी की शाश्वत विचारधारा की चरणबद्ध प्रस्तुति का सुदृढ़ आधार है। इसलिए स्वत: प्रमाण होने के साथ-साथ चिर प्रसांगिक भी है जो मनुष्य को लक्ष्य बोध कराते हुए उस अनन्त शक्ति सम्पन्न परमपिता के सामीप्य की सुखद अनुभूति कराने में पूर्णत: सक्षम है तथा सदा शाश्वत है, सच्चिदानन्द है उसी के साथ स्वयं जाम्भोजी का यह कथन कि **'मैं भूल न भाख्या थूलूं'** मैं भूलकर भी कभी झूठ नहीं बोलता इसकी सत्यता और आवश्यकता को पुष्टि प्रदान करता है। अत: बिश्नोई पंथ या प्रह्लाद पंथ एक दूसरे के पर्यायवाची हैं।

-राजकुमार सेवक
ग्राम रसूलपुर गुर्जर, कांठ मुरादाबाद
मो.: 9837672863

भगवान नृसिंह सुजस

॥दोहा॥

विष्णु भगत उवारियो, हण हिरणाकंस हथ्थ।
वण नरसींह निवैड़ियो, सुण प्रहलाद सुकथ्थ॥1॥
हरणक्ष अरु हरणाकंस, भय राकस दहु भ्रात।
दखै कयाधू दानवी, मुणै प्रहलादु मात॥2॥
सुणी जद भुवा श्रंगिका, जली तद मुवा जास।
ऊवा होलिका उबली, हुवा बालक हुलास॥3॥
शंड मर्क दत्रा शुकरा, असुरा शिक्षक उचार।
परम भगत प्रहलाद रा, चवां गुरा भक चार॥4॥
हरणंख इयो हेरनै, विष्णु कियो विधूंस।
वीकट भेष बणावियो, धुब धरा दियो धूंस॥5॥

॥छंद त्रिभंगी॥

हरणख हण हथ्था, कह उण कथ्था, असुर अकथ्था, गुण गथ्था।
जुध कर घण जथ्था, विकट विरुथ्था, विष्णु सथ्था, लथ बथ्था।
भय हर भू भथ्था, अगम अनथ्था, मुरड़त मथ्था मछरींगा।
अग्ररूप अमांमी, जग रा जांमी, नमो नमांमी नरसींगा।
जियै कुदरत मधुकर नरकींगा॥6॥
हिरणाकंस आता, देख डराता, भ्रात हताता भय खाता।
ब्रह्मा जब धाता, जाप जपाता, डील तपाता, तप थाता।
बांछित फल पाता, जो मन चाता, वणत विधाता वरदींगा।
उगरूप अमांमी जग रा जांमी, नमो नमांमी नरसींगा।
जियै कुदरत मधुकर नरकींगा॥7॥
इन्दर उतपाधू, इलत असाधू, नार कयाधू हरन किया।
नारद मग नादू, बीण बजादू, लखत विखादू शरन लिया।
उण उदर उपादू, भगत प्रहलादू, धर्म सिखादू, धुर ईंगा।
उगरूप अमांमी, जग रा जांमी, नमो नमांमी, नरसींगा।
जियै कुदरत मधुकर नरकींगा॥8॥
प्रहलाद उपाया, कोड कराया, थाल बजाया जलमाया।
कछु दिवस कहाया, बड़ा ज थाया, प्रेम बधाया, पढवाया।
हरि नाम हिजाया, रिदै रखाया, अवर न दाया गुरुजींगा।
अय रूप अमांमी, जय जग जांमी, नमो नमांमी, नरसींगा।
जियै, कुदरत मधुकर नरकींगा॥9॥
हरणाकंस आवै, सभा जुड़ावै, पूत बुलावै परखावै।
भगवान भणावै, कहां कहावै, किसको धावै का पावै।
विष्णु बतलावै, बोल सुणावै, धर्म बतावै, धरधींगा।
अय रूप अमांमी, जय जग जांमी, नमो नमांमी, नरसींगा।
जियै, कुदरत मधुकर नरकींगा॥10॥
मुझ में वो मेरा, तुझ में तेरा, ऐरा वैरा, जां हेरा।
भव में भज लेरा, भाव भलेरा, सकल सहेरा समझेरा।
दुख हरण दुनेरा, जय हो जेरा, वसू उजेरा, वरवींगा।
अय रूप अमांमी, जय जग जांमी, नमो नमांमी, नरसींगा।
जियै, कुदरत मधुकर नरकींगा॥11॥
थम्भै बिच थानग, अगन तपानग, बाथ घतानग, बंधवानग।
प्रेलादो धानग, राम रीझानग, किड़ी आनग कललानग,
हिरणा रोषानग, खाग उठानग, पूत मिटानग परठींगा।
अय रूप अमांमी, जय जग जांमी, नमो नमांमी, नरसींगा।
जियै, कुदरत मधुकर नरकींगा॥12॥
थम्भा थरकालम, महल धुजालम, क्रोध करालम विकरालम।
आ असुर उथालम, चोखट चालम, नखा वधालम, निरतालम।
चट चाम चिरालम, घोबा घालम, दुष्ट दबालग हतदींगा।
अय रूप अमांमी, जय जग जांमी, नमो नमांमी, नरसींगा।
जियै, कुदरत मधुकर नरकींगा॥13॥
जय जय जयकारा, सुणत शंशारा, दुंद वजारा, देवारा।
भय हर जन भारा, भगत उवारा, अवन सुधारा, आधारा।
कवि भमर पुकारा, सांम हमारा, सुख कर सारा हरसींगा।
अय रूप अमांमी, जय जग जांमी, नमो नमांमी, नरसींगा।
जियै, कुदरत मधुकर नरकींगा॥14॥

॥छप्पय॥

कुदरत रजब किरतार, वीकट जब रूप बणावण।
दैत्य गजब दुतकार, पटक जम लोक पठावण।
भगत सजब भव पार, भटक दुख दूर भगावण।
अगत अजब अवतार, सटक सुख सूर सजावण।
अदभुत रूपम धारत अवल, कवल ब्रह्म पुरण करण।
मधुकर चरण नम माड़वै, सबल तम अशरण शरण।(15)

॥इति भगवान नृसिंह सुजस॥

-भवरदान मधुकर माड़वा
हाल बबर मगरा, जैसलमेर, राजस्थान
मो.: 9414761361

परम भगवद् भक्त प्रह्लाद

सतयुग के अंत में दैत्यकुलीन हिरण्यकश्यपु के पुत्र के रूप में परम् भक्त प्रह्लाद का जन्म हुआ। स्कंद पुराण के काशी खण्ड में ऐसी कथा आती हैं कि सनतकुमार ही प्रह्लाद हुए थे। प्रह्लाद का अर्थ हैं 'सर्वोत्तम आनन्द'। प्र अर्थात् श्रेष्ठ, सर्वोत्तम और ह्लाद अर्थात् आनंद। अस्तु! प्रह्लाद यानि सर्वोत्तम आनंद वा परमानंद।

'प्रह्लादयति आह्लादयति निखिलं जगत् इति प्रह्लादः' अर्थात् जो सारे जगत् को सुख दे, उसका नाम होता हैं प्रह्लाद।

भगवान् के विभिन्न अवतारों में नृसिंह अवतार की अपनी महिमा है और इस अवतार का हेतु भक्त प्रह्लाद हैं। भगवान् दैत्य बालक प्रह्लाद की रक्षा के लिए 'नृसिंह' रूप धारण कर अवतरित हुए। प्रह्लाद का चरित्र श्रीमद्भागवत पुराण तथा श्री विष्णु पुराण आदि वृहद् ग्रन्थों में है। परम् भक्तों में सबसे ऊपर व सबसे पहले प्रह्लाद का ही नाम आता हैं।

एतानहं परम भागवतान् नमामि।

हम परम भागवतों को नमस्कार करते हैं। उनमें पहला परम भक्त कौन हैं?

'प्रह्लाद नारद पराशर पुण्डरीक व्यास अम्बरीश सूत शौनक भीष्म'।

प्रह्लाद पहले भागवत हैं, महाभागवत हैं- यानि भगवान् उनकी रक्षा में तत्पर हैं और महात्मा हैं। हमारा अहोभाग्य है कि भगवान् जम्भेश्वर के अनुयायी बिश्नोइयों का सम्बन्ध सतयुगीन प्रह्लाद से है। (देखें- पाहल मंत्र, कलश पूजा मंत्र)

सर्वप्रथम स्वर्ण कलश की स्थापना कर पहला पाहल प्रह्लाद जी ने ही लिया था। आइये! देखें कि दैत्य कुल में जन्म लेकर भी प्रह्लाद जी परम भागवत कैसे हुए?

श्रीमद्भागवत में वर्णन हैं कि दैत्य बालकों को उपदेश देने पर वे जिज्ञासावश पूछते हैं कि हमारे साथ रहते हुए तुम्हें ये ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ? तो प्रह्लाद जी उन्हें कथा सुनाते हैं - जब हिरण्याक्ष मारा गया और मेरे पिता तप करने चले गये, तो मौका देखकर देवताओं ने दैत्यों पर आक्रमण कर दिया। असुर भाग खड़े हुए। मेरी माँ को देवताओं ने बंदिनी बना लिया और वे मुझे अपने लोक में ले जा रहे थे। मैं उस समय गर्भ में था। बीच में नारद जी ने यह कहकर कि मेरी माँ (कयाधु) के गर्भ में परम भगवद् भक्त हैं- उसे छुड़ा लिया और अपने आश्रम में ले गये। उन्होंने मेरी माँ को इच्छा प्रसूति का वचन दिया और भागवत धर्म का श्रवण करवाया। उन्होंने मेरे पिता के आने तक मेरी माँ को अपने आश्रम में ही रखा। नारद जी का भागवत धर्म मेरी माँ को तो विस्मृत हो गया- परन्तु गर्भ में श्रवण करने पर भी मुझे वह याद है। प्रह्लाद जी असुर बालकों को अपना अंतिम निर्णय सुनाते हुए कहते हैं-

'प्रीयतेऽमलया भक्त्या हरिरन्यद् विडम्बनम्'।

अर्थात् भगवान् केवल निर्मल भक्ति से प्रसन्न होते हैं और सब साधन तो विडम्बना हैं। इसलिए भाइयो! **ततौ हरौ भगवति भक्तिं कुरुत दानवाः** -भगवान् की भक्ति करो। भक्ति का स्वरूप क्या है? इस बाबत् बताते हैं-

एतावानेव लोकेऽस्मिन् पुंसः स्वार्थः परः स्मृतः।
एकान्तभक्तिर्गोविन्दे यत् सर्वत्रं तदीक्षणम्॥

अर्थात् सब जगह परमात्मा का दर्शन हो, भक्ति का स्वरूप यही है।

असुर बालक प्रह्लाद जी के अनुयायी हो गए तो हिरण्यकश्यपु प्रह्लाद पर क्रोध करते हैं। प्रह्लाद जी कहते हैं-

'त्वय्यस्ति भगवान् विष्णुर्मयि चान्यत्र चास्ति सः'।

-तुममें भगवान् हैं, मुझमें भगवान् हैं, दूसरी जगह भी भगवान् हैं। इसलिए, शत्रु और मित्र- ये अलग-अलग नहीं होते।

हिरण्यकश्यपु प्रह्लाद को नानाविध दुःख दिये व मरवाने के अनेक विध यत्न करवाये। प्रह्लाद ने परमेश्वर को देखा नहीं था। अविचल विश्वास उसके जीवन में था। नानाविध कष्ट देने वालों के प्रति भी उनके हृदय में सद्भाव, चरित्र में विनय, वाणी में प्रेम-यह सब आश्चर्य चकित कर देता है।

अपने भाई हिरण्याक्ष के वध से क्षुब्ध हिरण्यकश्यपु भगवान् विष्णु का चरम द्वेषी था। वह भक्ति करके ब्रह्मा से न मारे जाने का वर प्राप्त करके आया था। अपने पुत्र प्रह्लाद की विष्णु के प्रति भक्ति से वह क्षुब्ध हो उठा। हिरण्यकश्यपु ने उसे मारने के लिए दैत्यों द्वारा मर्म स्थलों पर शूल से वार करवाये, हाथियों से कुचलवाया, विषधर साँपों से डसवाया, पुरोहितों से कृत्या राक्षसी उत्पन्न करवायी, पहाड़ों की चोटी से नीचे डलवाया, शम्भरासुर से अनेकों प्रकार की माया का प्रयोग करवाया, अंधेरी कोठियों में बंद करवाया, विष पिलवाया और खाना बंद कर दिया। बर्फीली जगह, दहकती हुई आग और समुद्र में बारी-बारी से डलवाया, आँधी में छोड़ दिया व पर्वतों के नीचे दबवा दिया परन्तु किसी भी उपाय से वह निष्पाप प्रह्लाद का बाल भी बाँका नहीं कर सका।

श्रीमद्भागवत पुराण के सप्तम स्कन्ध में प्रह्लाद चरित का विस्तृत व सुन्दर वर्णन है। इसमें कहा गया है कि हिरण्यकश्यपु ने लोहे के एक दहकते हुए खंभ की ओर इंगित करते हुए प्रह्लाद से पूछा कि क्या इसमें भी तेरा विष्णु है? प्रह्लाद के हाँ कहने पर वह क्रोधान्ध होकर सिंहासन से नीचे कूद पड़ा और लोह खंभ के जोर से घूँसा मारा। खंभे से अद्भुत 'नृसिंह' रूपधारी भगवान् प्रकट हो गये व सभा के दरवाजे पर ले जाकर उसे अपनी जाँघों पर गिरा लिया व अपने तीखे नखों से उसे चीर डाला व कलेजा फाड़कर उसे जमीन पर पटक दिया।

हिरण्यकश्यपु के मारे जाने के बाद प्रह्लाद भगवान् की स्तुति करते हैं। इस स्तुति में वे कहते हैं 'मैं इन भूले हुए असहाय गरीबों को छोड़कर अकेला मुक्त नहीं होना चाहता और इन भटकते हुए प्राणियों के लिए आपके सिवा कोई और सहारा भी नहीं दिखाई पड़ता। नृसिंह भगवान् प्रह्लाद की स्तुति से शान्त हो गये व मनोवांछित फल माँगने को कहा।

प्रह्लाद कहते हैं- 'मेरे वरदान शिरोमणि स्वामी! यदि आप मुँह माँगा वर देना ही चाहते हैं तो यह वर दीजिये कि मेरे हृदय में कभी किसी कामना का बीज अंकुरित ही न हो। उन्होंने अपने पिता के लिए दुस्तर दोष से शुद्ध होने का वर माँगा'।

प्रह्लाद की इच्छा न होने पर भी भगवान् ने उन्हें एक मन्वन्तर पर्यन्त दैत्यों का राजा बना दिया। भगवान् ने प्रह्लाद को उनकी कथा सुनते रहने व पुण्यों का भोग करने व ज्ञान से पापों को नाश करने का उपदेश दिया। असार संसार में भगवद् भक्ति का प्रचार करने का उपदेश दिया। नृसिंह भगवान् अपने भक्त प्रह्लाद को कहते हैं कि जिस वंश में तुम्हारे जैसे भगवद् भक्त का जन्म होता हैं- उसकी 21 पीढ़ियाँ तर जाती हैं। फिर हिरण्यकश्यपु तो तुम्हारा पिता ही है, उसके सम्बंध में क्या कहना? प्रह्लाद का चरित्र सुनने वाले पुरुष की भगवान् रक्षा करते हैं।

प्रह्लाद जी की न्याय निष्ठता

प्रह्लाद के पुत्र थे विरोचन और देवगुरु बृहस्पति के पुत्र थे- कच। वे दोनों एक दिन, एक ऐसी जगह जा पहुँचे जहाँ एक सुन्दर युवती तपस्या रत थी। दोनों ने उससे विवाह की याचना की। केशिनी नामक वह कन्या बहुत सुन्दर और बुद्धिमती थी। उसने दोनों में से सर्वश्रेष्ठ के साथ विवाह करने की रजामंदी जाहिर की। श्रेष्ठता चमड़ी से नहीं-सद्गुणों व सद्भाव से होती हैं। दोनों ने निर्णायक प्रह्लाद को बनाया व तय रहा कि जो श्रेष्ठ होगा-उसके साथ विवाह होगा और जो कनिष्ठ होगा उसका सिर काटा जाएगा। कच को देखकर प्रह्लाद सिंहासन से उठ खड़े हुए व प्रणाम करके उन्हें सिंहासन पर बैठाया। कच के पूछने पर बताया कि बृहस्पति मुझसे श्रेष्ठ हैं व विरोचन को कहा कि तुमसे कच श्रेष्ठ हैं। विरोचन ने कहा हमारा सिर काटा जाएगा। प्रह्लाद जी ने न्याय दिया- यह हम नहीं जानते-हम तो न्याय करते हैं।

प्रह्लाद ने विरोचन की गर्दन पकड़कर कच के पाँवों पर डाल दिया और कहा कि मैं अपना यह पुत्र तुम्हें समर्पित करता हूँ। तुम चाहे इसका सिर काटो, चाहे जिन्दा रखो। कच ने कहा कि तुम्हारी इस न्यायप्रियता के प्रसंग में यदि तुम्हारा पुत्र मर जाएगा, तो संसार में फिर कोई धर्म नहीं करेगा, न्याय नहीं करेगा। न्याय निष्ठ नहीं होगा। अस्तु! हमेशा धर्म व न्याय की रक्षा के निमित्त मैं तुम्हारे पुत्र को जीवन दान देता हूँ।

-**माँगीलाल बिश्नोई** 'अज्ञात'
सेवानिवृत्त व्याख्याता (संस्कृत)
मु.पो. खेतोलाई (जैसलमेर)

कवि हिम्मतराय विरचित प्रह्लाद चरित

भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि जब-जब भी भक्तों पर संकट आता है तब-तब भगवान अपने भक्तों के कष्ट निवारण हेतु इस सृष्टि पर अवतार लेते हैं। गुरु जाम्भोजी ने भी सबदवाणी में कहा है- 'जो जो सैतान करै आफारो, तां तां महत ज फळीयो।' जाम्भाणी साहित्य की भी यही मान्यता है कि चारों युगों (सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग, कलयुग) में भगवान विष्णु (जो निरह, निरंजन, निराकार आदि-अनादि है)। इस पृथ्वी पर अवतार लेकर दुष्टों को नष्ट करते हैं। इसी क्रम में आदि विसन ने कलयुग में गुरु जाम्भोजी के रूप में अवतार लेकर भक्तजनों को मुक्ति प्रदान की थी। इसके लिए उन्होंने भक्त प्रह्लाद को वचन दिया था। मूल वाणी का यह सबद देखें-

म्हे वाचा दई प्रह्लादा सूं, सो चेलो गुरु लाजै।
कोड़ तेतीसूं बाड़ै दीन्ही, तिनकी जात पिछाणो॥

(सबद 111)

गुरु जाम्भोजी की वाणी से यह सिद्ध होता है कि प्रथम बिश्नोई सतयुग में प्रह्लाद बने थे और उनके साथ पांच करोड़ लोगों को मुक्ति प्राप्त हुई थी। उनका मूल सबद देखें-

वारा काजै हरकत आई, अधबिच मांड्यो थाणो।
पहलू पहलादा आप पतलियो, दूजा काजै काम बिटलियो।
खेत मुक्त जे पंच करोड़ी, सो पहलादा गुरु की वाचा बहियो॥

(सबद 58)

जांभाणी साहित्य में कवि तेजोजी, वील्होजी, सुरजनजी पूनिया आदि ने भी अपने काव्य में भक्त प्रह्लाद का नामोल्लेख किया है। कवि केसोजी गोदारा, हरचन्द ढूकिया, ऊदोजी अडिंग, साहबराम जी राहड़, लछमण जी सियोळ आदि ने भी प्रह्लाद चरित का व्याख्यान कथा काव्य के रूप में किया है। प्रह्लाद चरित एक पौराणिक आख्यान है, जिसका उल्लेख इतर समाज के भक्त कवियों ने किया है। जिनमें प्रमुख है- जनगोपाल विरचित प्रह्लाद चरित, राम स्नेही सम्प्रदाय के कवि खुशालचन्द कृत प्रह्लाद चरित, जसनाथी सम्प्रदाय प्रह्लाद सम्बन्धित सबद (छोटा, बड़ा), हाड़ौती में प्रह्लाद चरित रचनाएं मिलती हैं। हमें एक 'प्रहलाद चरित्र' कवि हिम्मतराय का मिला है, जिसके विषय में इससे पूर्व कुछ भी प्रकाशित नहीं हुआ है।

हम प्रहलाद चरित्र के विषय में जाने इससे पूर्व हम कवि हिम्मतराय जी के विषय में जान लें तो उचित रहेगा। हिम्मतराय जी गायणा बागड़िया गौत्र के थे। इनके पिता का नाम गंगाराम था। इनका जन्म आदमपुर (हरियाणा) में हुआ था। इन्होंने 110 वर्ष की उम्र पाई। इनके पुत्र का नाम हरजी था जिन्होंने 90 वर्ष की उम्र पाई। इसी तरह इनके पौत्र ने 85 वर्ष की उम्र पाई जिनका नाम बजरंग जी था। वर्तमान में इनके पड़पौत्र श्री बृजलाल जी जीवित है जिनकी आयु 97 वर्ष है। इस तरह इनका कार्यकाल वि.सं. 1815-1925 निर्धारित किया जा सकता है। ये कवि साहबरामजी राहड़ (वि.सं. 1871-1948) एवं स्वामी ब्रह्मानन्दजी (वि.सं. 1910-1980) के समकालीन थे।

ये गुरु जाम्भोजी के हजूरी शिष्य साल्होजी के वंशज थे, जो मूलत: मुकाम के पास के गांव अणखीसर के निवासी थे। वहां आज भी साल्होजी की खुदाई हुई साल्हो-तलाई (नाडी) प्रसिद्ध है। साल्होजी के बाद उनके वंशज उत्तर प्रदेश चले गये जिनमें हिम्मतराय के वंशज भी थे। ये वहां नगीना में रहने लगे। बाद में हिम्मतराय के पिता गंगाराम जी आदमपुर में आकर बस गये। कहते हैं कि गंगाराम जी कांठ के राजा के साथ मुकाम आये, वे आदमपुर ले गये। उस समय बिश्नोइयों को चलु-पाहल दिलाने वाला कोई श्रेष्ठ पुरुष नहीं थी। गांव के लोगों ने तब गंगाराम जी को रहने के लिए पक्के मकान बनाकर दिये थे, जबकि उस समय आदमपुर में सभी बिश्नोइयों के घर कच्चे थे। यह बात आज भी हिम्मतराय के प्रपौत्र श्री बृजलालजी सबको बड़े गर्व से बताते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि धार्मिक संस्कार करवाने वाले व्यक्ति का उस समय समाज में कितना अधिक मान था।

हिम्मतराय जी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गांव

में ही प्राप्त की। बाद में आपने सबदवाणी और जाम्भाणी साखियों को याद किया। आपने वैदिक एवं सनातन धर्म की शिक्षा भी प्राप्त की। आप जागरण में राव दूदा, पूल्होजी, राव हम्मीर, राव मालदेव, राव बीदा, रणधीर बाबल, लोहा पांगल आदि के प्रसंग जम्भ लीला के संदर्भ में सुनाते रहते थे। आपने ऊदो भक्त और महमाई की कथा भी लिखी। आपने बीदे जोधावत, पथभ्रष्ट संन्यासियों, अवतार के समय आये देवगणों, पतित मनुष्य सम्बन्धित कवित, सवइये एवं छंद लिखे। आपने जम्भ स्तुति, जम्भलीला एवं बारखड़ी (क-ह) के इकतीस छंद लिखे। आपकी सबसे प्रमुख रचना प्रह्लाद चरित्र है।

हिम्मतराय जी कवि का प्रह्लाद चरित्र एक पौराणिक आख्यान काव्य है। इसमें 94 छंद एवं वार्ताएं हैं। वार्ताएं गद्य में एवं छंद पद्य में हैं। चौपाई-59, दोहा-33 एवं एक चौबोला छंद है। एक दोहा की एक पंक्ति कम है जबकि 17 चौपाइयों की भी एक-एक पंक्तियां हैं। इसमें जय विजय, सनकादिक ऋषि, शुक्राचार्य, प्रह्लाद, हिरणाकुश, श्रीयादे (कुम्हारी), दीति, होलिका नृसिंह आदि के कथन (संवाद) से कथा आगे बढ़ती है। कवि कथा का प्रारम्भ सरस्वती वंदना से करता है। इस कथा का प्रथम छंद देखें-

एक बार सनकादिक ऋषि भगवान के दर्शन करने जाते हैं। वहां जय-विजय पहरेदारी करते हैं। ये ऋषि को दरबार में जाने नहीं देते हैं। इससे ऋषि नाराज होकर वहां से चले जाते हैं और उन्हें श्राप देते हैं। जय-विजय भगवान को सब बातें बताते हैं। भगवान उन्हें ऋषि आश्रम श्राप मुक्ति का उपाय पूछने भेजते हैं। ऋषि उन्हें श्राप मुक्ति की युक्ति भक्ति से बताते हैं। ऋषि के आशीर्वाद से जय-विजय का जन्म मुलतान में हिरणाकुश और हिरणाक्ष के रूप में होता है। हिरणाक्ष ने भगवान से वैर किया। इसलिए हरि ने उसे मार दिया। भाई की मृत्यु से हिरणाकुश हरि का वैरी हो जाता है।

हिरणाकुश ने अपने गुरु शुक्राचार्य से बदला लेने का उपाय पूछा। गुरु ने ब्रह्म तपस्या करने को कहा। ब्रह्मा ने तपस्या से खुश होकर उसे दिन-रात, बारा मास, धरती-आकाश, अन्दर-बाहर, अस्त्र-शस्त्र से कभी न मरने का वरदान दिया। इस वरदान से देवता अप्रसन्न हुए और इन्द्र ने मुलतान पर घेरा डाला और हिरणाकुश की पत्नी दीति को बन्दी बना लिया। नारद ने दीति को छुड़ाया और इन्द्र को कहा हरि स्वयं इनके गर्भ से जन्म लेंगे।

समय पाकर प्रह्लाद का जन्म हुआ। हिरणाकुश ने शुक्राचार्य को उसका गुरु नियुक्त किया। गुरु ने उसे हिरणाकुश का नाम लेने एवं हरि स्मरण करने का मना किया। प्रह्लाद पाठशाला में जाते हैं। वहीं एक दिन बच्चों के साथ गेंद खेल रहे थे। तब उनकी गेंद प्रजापत (कुम्हार) के घर चली गई। प्रह्लाद गेंद लेने उनके घर गये तो वहां श्रीयादे (कुम्हारी) अपने घर में हरि का जाप कर रही थी। तब प्रह्लाद कहते हैं-

मेरो पिता निज नाम जपावे, बांगो नाम क्यूं न बतावे।
मेरे पिता को नाम उचारे, बिंगो काम मिनट में सारे॥37॥

तब कुम्हारी उसे कहती है कि उसके आवे में बिल्ली के बच्चे रह गये हैं और उसने आवे को आग लगा दी है। अब हरि ही उसके बच्चों को बचाएंगे। श्रीयादे प्रह्लाद से कहती है-

तेरे पिता को झूठो नाम, अन्त समय आवे न काम।
जो बिल्ली का बच्चा बचावे, वो त्रिलोकीनाथ कहावे॥38॥

प्रह्लाद ने कुम्हारी से वचन लिया था कि जब आवा पक जावे तो उस समय उसे बुलाया जावे। ऐसा ही कुम्हारी ने किया। जब आवा खोला तो कुछ बर्तन कच्चे रह गये और बिल्ली के बच्चे भी जीवित बच गये। इस चमत्कार से प्रह्लाद हरि नाम का स्मरण करने लगा। तब उसकी माता कहती है-

प्रह्लाद कहै लड़कों से, बात सुनो चितलाय।
राम नाम सुमरण करो, भारी रट लगाय॥52॥

इस बात से नाराज होकर प्रह्लाद का गुरु उसे राजा हिरणाकुश के पास ले जाता है। तब राजा कहता है-

तब हिरणाकुश बोल्यो झुंझलाके, पावो जहर मुझ सामें लाके।
जहर लाय प्रह्लाद को दीन्हो, हरि सुमरण करके पी लीन्हो॥58॥
जरा जहर तन में नहिं आई, तब हिरणाकुश गयो घबराई।
ऊंचे पर्वत इसे ले जाओ, दे धक्का इसे गिराओ॥59॥

बिन आई वो मर जावे, ऊंचे इतने से कौण बचावे।
जपत राम प्रह्लाद जी आयो, सखा के संग खेलत पायो ॥60॥
ले जो पकड़ कुए में डारो, कैसे निकले यो हत्यारो।
उपर लगावो शिला एक भारी, यूं छूट जावे गेल हमारी ॥61॥
सागर मंझे मगर बतावे, वांसे बचकर कैसे आवे।
लेजो समंद में इसको डारो, डूब मरे यो हत्यारो ॥63॥

तब हिरणाकुश ने प्रह्लाद को मारने के लिए फौज बुलाई, देखे–

तब हिरणाकुश फौज बुलाई, मारो पहलाद डरो मत भाई।
कोई तीर तलवार चलावे, प्रह्लाद के एक लग न पावे ॥65॥

जब ये सभी प्रयत्न असफल हो गये तो प्रह्लाद एवं उसके सभी सखाओं को एक भवन में रोक देते हैं। बाहर पहरा बैठा देते हैं और अन्दर कुछ भी खाने-पीने को नहीं देते हैं। लेकिन हरि कृपा से वे सभी सुरक्षित निकलते हैं। अंत में हिरणाकुश अपनी बहन होलिका के पास आता है। वह शील धर्म का पालन करने वाली थी। होलिका महादेव के चरणों का ध्यान करती थी। महादेव जी ने उसे एक शक्ति वस्त्र ओढ़ना प्रदान किया। जिसको अग्नि भी नहीं जला सकती थी। इसलिए वह प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि में बैठ गई, देखें–

काठ मंगाय बहुभांत के, कियो सल तैयार।
भगत उदास होय के, रहे हरि नाम पुकार ॥77॥
कर सिंगार होलिका, बैठी सल के मांय।
अब ल्यावो प्रह्लाद को, दो मुझको पकड़ाय ॥78॥

अग्नि में जलकर होलिका भस्म हो गई। यह बात किसी ने हिरणाकुश को जाकर कही। भक्त प्रह्लाद हरि भक्तों के पास आता है, देखें–

प्रह्लाद भक्त सेवेरे आयो, सब भक्तां में आनन्द छायो।
जय जयकार भक्त उचारे, राखे भगवान कोई न मारे ॥83॥
प्रह्लाद आय के वचन उचारा, करो स्नान भक्त मिल सारा।
लावो सामग्री यज्ञ रचावां, इमरत रूपी पाहळ बणावां ॥84॥
सब भक्तां ने पाहळ पिलायो, इतने में हिरणाकुश आयो ॥85॥

हिरणाकुश बड़ी ऊँची आवाज में कहता है–

कहां है राम (विसन) बता दे तेरो, धड़ से सीस उतारूं तेरो ॥86॥

तब प्रह्लाद बड़े शांत मन से कहता है–

तोमें मोमें खड़ग में भाई, पाटो खंभ देर ना लाई।
नरसिंघ रूप धार हरि लीनो, पकड़ हिरणाकुश काबू कीनो ॥87॥
नाखून बधाय हरि ने लीना, सब वरदान पूरा कर दीना।
अस्त्र शस्त्र पास में नाहीं, तेरहवों महिनों दियो बनाई ॥88॥
सर्व भक्त मिल जयकार उचारा, हिरणाकुश नख उदर विदारा ॥89॥

अंतिम छंदों में नृसिंह (अवतार) प्रह्लाद से कहते हैं, देखें–

वचन कहे प्रह्लाद से, हरि मन में हरखाय।
तेरे भक्त जावेंगे सुरग में, इसमें संशय नाय॥
और वचन तूं मांग ले, जो तेरे मन मांय।
और कथा मैं कहूं, सो सुनले चितलाय॥
दिया वचन पूरा करूं, इसमें संशय नाय।
पांच तिरे प्रह्लाद संग, सात हरिचंद राय॥
नौ क्रोड़ युधिष्ठिर साथ में, दूं सुरगां पहुंचाय।
बारह क्रोड़ा वास्ते, आवे जम्भ भगवान।
बिश्नोई पंथ प्रगट करे, माने सकल जहान॥
ये कथा प्रह्लाद की, सुनो सभी चितलाय।
हिम्मतराय कथना करी, दीन्हीं आज सुनाय ॥94॥

कवि हिम्मतराय विरचित प्रह्लाद चरित्र की भाषा बहुत ही सरल, सहज एवं समझ में आने वाली है। उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि गुरु जाम्भोजी ने अपने भक्त प्रह्लाद को दिये हुए वचन का पालन करने के लिए कलियुग में अवतार लिया था और बारह कोटि जीवों का उद्धार किया था। इससे पूर्व वे सतयुग में अवतार ले चुके थे और उस समय ही बिश्नोई पंथ की स्थापना की थी। सुबह स्नान करना, हवन करना एवं अमृत रूपी पाहल लेना उस समय की परम्परा बन चुके थे। होली पर पाहल बनाने की परम्परा उस समय ही स्थापित हो चुकी थी, जो आज तक लगातार चालू है। धन्य है बिश्नोई पंथ के प्रथम पुरुष प्रह्लाद को। धन्य है कवि हिम्मतराय को, जिन्होंने अपने कथा काव्य प्रह्लाद चरित्र में उस आदि पुरुष प्रह्लाद के यश का वर्णन बड़ा ही सहज ढंग से किया है।

– डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बी-111, समता नगर, बीकानेर (राज.)
मो.: 9460002309

हरि की भक्ति करे अखंडा, प्रहलाद पंथ चल्यौ नवखंडा

भारतीय अध्यात्म परंपरा में भक्ति के आचार्य के रूप में प्रह्लाद जी सहर्ष याद किए जाते हैं। भयानक विषम परिस्थितियों में जब हिरण्यकश्यपु ने ढूंढ-ढूंढ कर धर्म का समूल नाश करने का उपक्रम किया और अत्याचार की पराकाष्ठा हुई तो धर्म का पौधा उसी के आंगन में प्रस्फुटित हो गया, जहां इसे नष्ट करने की नींव रखी गई थी। हिरण्यकश्यपु अधर्म का प्रतीक है तथा इसका सीधा संघर्ष धर्म से है और धर्म का पक्ष लेने वाला इसका शत्रु है, चाहे वह इसका पुत्र भी क्यों न हो। हिरण्यकश्यपु अपने पुत्र प्रह्लाद को शत्रु मानता क्योंकि वह धर्म की राह पर चल रहा था, परंतु अधर्म के मार्ग पर चलने वाले हिरण्यकश्यपु को प्रह्लाद ने कभी अपना शत्रु नहीं माना, जब उन पर भयंकर अत्याचार किए गए, उनके शरीर को खत्म करने के लिए अनेकों उपाय किए गए, तब भी प्रह्लाद को अपने पिता से इन अत्याचारों को लेकर कोई शिकायत नहीं थी। प्रह्लाद प्रत्येक स्थिति में निश्चिंत और प्रसन्न हैं। उन्हें कोई भय नहीं है क्योंकि उन्होंने धर्म का सहारा लिया है और धर्म का कभी समूल नाश नहीं हो सकता। जिस प्रकार भगवान का नाश नहीं हो सकता, ऐसे ही भगवान द्वारा पोषित धर्म का नाश नहीं हो सकता है। अधर्म आगंतुक है, उसकी जड़ नहीं है, वह जबरदस्ती धर्म का स्थान लेना चाहता है, वह भयभीत रहता है, आशंकित रहता है, इसलिए सबसे पहले वह धर्म से शत्रुता करता है, अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है। उसे कहीं भी धर्म का अंशरूप में भी प्रकट रहना स्वीकार नहीं है, वह प्रत्येक वे तरीके अपनाता है जो धर्म को अधिकारिक हानि पहुंचा सके। अधर्म अपनी फौज खड़ी करता है और अधर्म के मार्ग पर चलने वाले यह मानते हैं कि हम ही सही है। हिरण्यकश्यपु और प्रह्लाद का पिता-पुत्र का संघर्ष नहीं है, यह धर्म और अधर्म की लड़ाई है। वास्तव में यह एक ऐसी लड़ाई है जो एक तरफा है। प्रह्लाद तो शांत है, आक्रामक तो हिरण्यकश्यपु है। धर्म कभी लड़ाई नहीं करता, लड़ाई तो अधर्म ही करता है, धर्म तो अपनी रक्षा करता है। पहल अधर्म की ओर से ही की जाती है। संसार में अब तक धर्म को लेकर जो लड़ाई-झगड़े हुए जिन्हें धर्मयुद्ध का नाम दिया गया, जो कि असंगत है, धर्म क्यों युद्ध करेगा? हिंसा के बल पर धर्म को विस्तार की क्या आवश्यकता है? धर्म तो शाश्वत है उसे कोई मिटा ही नहीं सकता। प्रह्लाद ने कभी अपने शरीर को दिए जा रहे कष्टों का प्रतिकार नहीं किया। उन्होंने माना कि यह शरीर पिता की अमानत है जिसने इसे पैदा किया है वह इसे नष्ट करना चाहे तो मुझे क्या एतराज है। जब बालसखा प्रह्लाद से पूछते हैं कि जन्मदाता पिता ही आपके शत्रु बन गए हैं तो आपकी रक्षा कौन करेगा? तब प्रह्लाद अत्यंत हर्षित होकर परमपिता परमात्मा की महिमा का बखान अपने सखाओं के समक्ष करते हैं-

प्रह्लाद कहै सखा सुन लीजै,
हरि के चरण कंवल चित दीजै।
सखा मन में भै विचारे,
विसनु भज्य असुर मोहै मारे।
प्रह्लाद कहै नहीं कोई मारे,
जाकै परमेसर रखवारे।
ग्रभ मांझ कीनी प्रतिपाला,
वै अब क्यूं भूलै दीनदयाला।
तीन लोक जिन रचे,
रिजक मौत जिन हाथ।
प्रह्लाद कह मारे कवन,
सदा संगाती साथ।
जाग्रत चितवै सुपनै आवै,
पहलु भज अंत हरि धावै।
प्रह्लाद कहै मन कुं भय तजीयै,
नृभै होय नारायण भजियै।
काचौ मत भक्त नहीं होई,
तन मन अरपै लहै हरि सोई।

-(उदोजी अड़ींग रचित 'प्रह्लाद चिरत' से आलेख का मूल पाठ)

'प्रह्लादजी अपने सखाओं से कहते हैं कि 'भगवान को जागते हुए तो याद रखना ही है, हमारे स्वप्न में भी वही आने चाहिए। हमारी ऐसी चित्तवृत्ति बन जाए। पहले भगवान का भजन करना पड़ता है फिर वह आता है। भगवान का भक्त निर्भय हो जाता है उसे किसी का डर नहीं रहता। भगवान रक्षा करेंगे या नहीं करेंगे, ऐसी कच्ची मति है, जो भगवान को तन, मन अर्पण कर देता है वही भगवद्प्राप्ति करता है। किसी प्रकार का भ्रम नहीं रखना चाहिए।'

आग्यान भरम भयो उर मांही,
तब लग हृदै थिरता नाहीं।
भयो भरम विसवा वीसै,
भूले इष्ट दूसरो दीसै।
कांच महल स्वान पग धरै,
भरम्यौ कूकर भुंस भुंस मरे।
जांहा झाकै जांहा चहूं देखै,
अपनो रूप आप भर लेखे।
भरम्यो केहर देख्यौ कूप,
प्रतिबिंब जानै दूसरो रूप।
सिंघ सबद कूप मै हुवौ,
भरम्यौ केहर कूप पड़ मूवौ।
है किसतुरी मृग ही पासा,
भरम्यो वन वन सुगंधै घासा।
है मांही अरू नहीं पिछाणै,
यूं भूले इष्ट आंन ही जांणै।
विसनु व्यापक घट घट मांही,
ज्ञान विचारो दूजो नांही।
पूरे रहयौ सब ब्रहमंड मांही,
हरि बिन तिल भर खाली नांही।

–'जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है– 'धर्मो रक्षति रक्षितः। 'प्रह्लादजी धर्म–ध्वजा लेकर आगे बढ़ रहे हैं, धर्म का प्रचार और धर्म के मार्ग पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान बताया गया है,परंतु उत्तीर्ण का प्रमाण–पत्र भी उसे ही मिलता है, जो परीक्षा देता है। जब संपूर्ण संशयों का नाश होने के बाद अपने निश्चय में दृढ़ता आ जाती है कोई शंका नहीं रहती फिर इस मार्ग पर चलने वाला कभी पीछे मुड़कर नहीं देखता और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। जिस प्रकार एक कुत्ता कांच के महल में अपने ही प्रतिबिंब को देखकर भौंकता है, एक शेर कुएं में अपनी ही छाया को देखकर उसमें छलांग लगा देता है और एक मृग जिसके नाभि में कस्तूरी है परंतु वह उस कस्तूरी की प्राप्ति के लिए वन में भटकता है। इसी प्रकार भ्रम में किसी प्रकार नहीं पड़ना चाहिए और अपने इष्ट देव को सर्वव्यापक समझकर उसका ध्यान करना चाहिए।'

वह ताकतवर सत्ता, जिसका इस धरती पर एकछत्र राज था उसके सामने खड़ा होना अक्षम्य अपराध माना जाता था। संक्रमित व्यवस्था को उखाड़ने का साहस प्रह्लाद ने किया था। क्रांति बलिदान मांगती है और इसका नेतृत्व करने वाले को अनेकों कष्ट झेलने पड़ते हैं, अपने प्राण भी गंवाने पड़ते हैं, अपना रचता–बसता भरा पूरा संसार स्वाहा करना पड़ता है। अपनी खुशियां, अपने अरमान रौंद डालने पड़ते हैं। प्रह्लाद को दिए अपार कष्टों की जब इंतहा हो गई और आखिर में उनकी बुआ उन्हें जलाकर भस्म करने के लिए अग्नि में लेकर बैठ जाती है तो किस प्रकार दैत्य उत्सव मना रहे थे और प्रह्लाद की मां तथा साधुजन कैसे विलाप कर रहे थे, इसका बहुत मार्मिक वर्णन कवि उदोजी अड़ींग ने किया है–

ज्यु जलै लाख अग्न मै गैरी,
ज्युं होली भई भसम की ढ़ेरी।
प्रह्लाद प्रेम हरि जाको दासा,
तत छिन लीयो अपने पासा।
असुर भये मन मे कुशयाली,
अब प्रह्लाद दीयो नीव जाली।
दैत्य हरखि अपणै घर आया,
साधा कै मन सोक बढ़ाया।
माता के मन भयो अचौना,
हाय पूत कब देखु नैना।
रोवै झूरै विलाप रू करै,

सुत देखि विन कल नहिं परै।
आंगन के बिच खेलतो बाला,
बोले तोतरे वचन रसाला।
वा सुरति कब देख हु नैना,
इस विध कहै त्रहै के बैना।
माता मन में करे अंदेसा,
कब देखु वै बालक भैसा।
साधु सखा करै अणराई,
कहां रहयौ संतन सुखदाई।
साध सभा में सोभत केसा,
नक्षत्रा मांही चंदा जैसा।
साधु झुरै बहुत मन मांही,
मंडली को मांण दीसै नांही।
नर पसु पंखी भए उदासी,
कहां गये वै सुख के रासी।'

रातभर भयंकर विषाद में बिताने के बाद प्रात:काल जब साधूजनों को पता चलता है कि प्रह्लाद जीवित है तो वह आनंद में भर जाते हैं। प्रह्लाद की माताजी विशेष आनंदित होती है। घर-घर बधाई बंटने लगती है, लोग कथा- कीर्तन करते हुए हरि गुण गाते है-

प्रात भए प्रह्लाद ई आए,
वानी चड़ी जु कंचन ताए।
हरि जिन हीरा कंचन तासै,
सह कसौटी दुति प्रकासै।
माता के मन भयौ आनंदा,
मानु उगो दुतिया चंदा।
निरखत पुत्र नैन भए ठाढ़े,
सील गात प्रेम बहु बाढे।
जल पिया जिम मिटै पीयासा,
माता मन की पुरबी आसा।
साध मिलै हृदै हरिखाई,
घर घर बंटण लगी बधाई।
कथा कीरतन हरि गुण गावै,
मिलै परसपर प्रेम बढ़ावै।
चले लोग चहुं दिसै ते आवै,
जिन प्रह्लाद को दरसन पावै।
सुनै ज्ञान लहै उपदेसा,
चहुं दिस सब बढ़यौ प्रवेसा।'

इसमें एक बात विशेष ध्यान देने की है की इस अग्निकांड के बाद प्रह्लाद के अनुयायियों का विश्वास दृढ़ हो जाता है, वे अब हिरण्यकश्यपु का भय नहीं मानते, उन्हें मृत्यु का भी भय नहीं रहा है-

प्रचाये प्रह्लाद जु, संत कोड़ तेतीस,
संक न मानै अस्वर की, सिरै श्री जगदीश।
विसनु पूजा प्रसाद ही लेवै,
आनदेव पर दिष्ट न देवे।
जीजकाण सब दीनी डार,
निरभे सिवरै सिरजण हार।'

अभी एक परीक्षा बाकी है, वह हिरण्यकश्यपु का अन्त और प्रह्लाद के भक्ति, प्रेम और विश्वास के राज्य की स्थापना करेगी। अब अत्याचार अपनी सीमाओं को लांघ चुका है। वह नन्हा बालक एक खंभे से बांधा गया है और उससे सवाल पूछा जा रहा है कि बता तेरा भगवान कहां है? अब मैं तुझे मारूंगा, देखता हूँ तुझे कौन छुड़ाने आता है। ऐसी परिस्थिति में भी प्रह्लाद निश्चिंत और आश्वस्त है। भगवान की भक्तवत्सलता पर उन्हें पूरा विश्वास है, और वह विश्वास फलिभूत होता है, भीषण विस्फोट के वह खंभ फटता है तथा भगवान बड़े विकराल रूप में प्रकट होकर दैत्य का विनाश करते हैं -

तब प्रह्लाद खंभ के बांधा,
असर खड़ग सीर पे सांधा।
कहां विसनु ऊं बसत है, प्रह्लाद बताओ मोहि।
अब मैं तोकुं मार हूँ, कूंण छुडावै तोहि।
मौ मे तौ मे खड़ग खंभ में, सकल ओर भरपूर,
मंहि धणिया खंभ मे, तम मत जांणो दूर।
मोहे बताय कहां खंभ मांह,
कर कोप असर जब खड़ग बांह।

फाटौ ज खंभ भयौ दोय फाल,

कर गाज प्रकटे सिंह पंचाल।

महा तेजव तन नरसिंघ रूप,

सै कंपमान भयो असुर भूप।

कर गिरयौ खड़ग भागो पुलाय,

डेहली जु बीच जब गहयौ है धाय।'

हिरण्यकश्यपु वध के बाद प्रह्लाद को अपनी गोद में बैठाकर भगवान अपना हस्तकमल उनके सिर पर रखते हैं। वे खेद प्रकट करते हुए कहते हैं कि- 'मैंने आने में देरी कर दी परन्तु तुम अपने निश्चय पर अडिग रहे, ज्यों-ज्यों दैत्य ने तुम्हें अधिकाधिक कष्ट दिये मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम बढ़ता ही गया।' वे प्रह्लाद से वरदान मांगने के लिए कहते हैं-

नरसिंघ तब प्रह्लाद कै, हस्त कंवल धर सीस।

तुमरे निज भक्ति है, यूं बोले जगदीस।

यूं बोले जगदीस, तम नाम की टेक न छाडी,

जु दुःख दीन्हों दैत, त्यूं मम प्रीत जु बाढ़ी।

मैं पल पल आयो नहीं, तुम तज्यौ मन रंग।

भक्त बछल बिड़द काज है, यूं भाखै नरसिंघ।

मांग मांग प्रह्लाद तुम, प्रसन भयो में तोय।

जो तुमरी अंछा हुवै, मम अग्या सुं होय।

प्रह्लाद सबको विस्मित करने वाला वरदान मांगते हैं, वे भगवान से कहते हैं कि 'सम्पूर्ण विश्व का दुःख मुझे दे दो और सभी जीवों को सुखी कर दो।' प्रह्लाद के सिवाय ऐसा वरदान और कौन मांग सकता है? शत्-शत् नमन है ऐसे भक्त शिरोमणि को। बिश्नोई पंथ के लिए यह गौरवान्वित करने वाली बात है उन्हें प्रह्लाद पंथी कहा जाता है-

मांगु काहा सुनो मम सामी,

तुम सब जानो अंतर जामी।

सकल विश्व को दुख मोहि दीजै,

सबही जीव सुखी कर लीजै।'

संदर्भ ग्रंथ-

1. पोथो ग्रंथ ज्ञान-जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर।

- विनोद जम्भदास कड़वासरा
ग्राम-हिम्मतपुरा (पंजाब)
E-mail: Jambhdasvinod29@gmail.com

परमानन्द प्रह्लाद

आंच सांच पर आवसी, झूठा करसी झौड़।
सतवादी संसार सूँ, मनड़ो लेसी मौड़॥1॥
पापी परगट देखलो, खुलो रचावे खेल।
हाण धरम री होवता, मनड़ै भरियो मैल॥2॥
पापी पाप कमावता, धरम गयो जग डूब।
चोरी जारी चोवटै, खल जन करता खूब॥3॥
मानवता महि (पर) सूँ गई, दानवता दरसाव।
दुष्ट भाव दिल में रहै, भलो न व्यापै भाव॥4॥
सतजुग में सत राखियो, परगट हो पहराज।
पांच करोड़ पोसाविया, सुरगा में सुरराज॥5॥
सात करोड़ हरिचंदे, रोहित राणी साथ।।
पांच करोड़ दहूठले, दोपा कुन्ती मात॥6॥
पत पेहराजे राखणी, कवल सुधारण काज।
आये कलि जुग कारणे, जम्भगुरु महाराज॥7॥
धजा धरम री धारणे, पापी पताळा पैख।
सार-संभाल सज्जणै, दुस्टा दाटण देख॥8॥
पहराजे री परम्परा, वड़ी पवित्र पाय।
बिश्नोइयों विष्णु भणो, कदै नह निरफल जाय॥9॥
हिरणाकुश हर घट बसै, पापी पाप कमाय।
दूर करण कूँ दाणवी, मया मोह मन मांय॥10॥
खिलेहरी ऊदो कहे, दावन मन में दोय।
बफ व्यावशर मरत भोज, बंद किया सुख होय॥11॥

-उदयराज खिलेरी, अध्यापक
गाँव-मेघावा,तहसील-चितलवाना (जालोर)
राजस्थान मो.: 9828751199

बधाई सन्देश

राजपाल सुपुत्र ठेकेदार श्री देवेन्द्र बूडिया (सचिव अ.भा. बिश्नोई महासभा), निवासी गूडा बिश्नोइयान, जोधपुर का चयन Emirates Aviation University में पायलट की ट्रेनिंग के लिए हुआ है। यहां से फाउंडेशन कोर्स करने के बाद वर्तमान में आप पुर्तगाल में ट्रेनिंग कर रहे हैं। वहां से 18 माह की ट्रेनिंग के पश्चात दुबई में आपकी ट्रेनिंग पूरी होगी।

अंकिता बिश्नोई सुपुत्री श्री भैरूलाल बिश्नोई, निवासी भीलवाड़ा (राज.) ने केलिफोर्निया साऊथन यूनिवर्सिटी अमेरिका से कम्प्यूटर साईंस में एम.एस.सी. की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात अमेजॉन कम्पनी सेनफ्रांसिसको अमेरिका में आपकी नियुक्ति हुई है।

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के विभागाध्यक्ष प्रो. किशनाराम बिश्नोई को धार्मिक अध्ययन संकाय का अधिष्ठाता बनाया गया है। डॉ. बिश्नोई ने एक दर्जन से अधिक ग्रन्थों की रचनाएं की हैं तथा आपका लेखन कार्य अनवरत रूप से चल रहा है।

डॉ. ओमप्रकाश बिश्नोई (व्याख्याता, राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, बीकानेर) निवासी गांव रोडा, तह. नोखा जिला बीकानेर को शिक्षा एवं पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए गणतन्त्र दिवस पर बीकानेर जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया।

अनुकृति बिश्नोई सुपुत्री श्री विनोद कुमार खिलेरी, निवासी गांव आदमपुर, हाल निवासी सैक्टर 17-ए, गुरुग्राम ने बैंगलोर में 4-10 फरवरी तक आयोजित यूनिप्लाई टेन्पिन बाउलिंग चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।

पृथ्वी सिंह बैनीवाल निवासी सैक्टर 14, हिसार को समाज सेवा एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए 'राह ग्रुप फाउंडेशन' द्वारा प्रशस्ति पत्र व शॉल देकर सम्मानित किया गया।

आप सबकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भक्त प्रह्लाद : एक क्रान्तिकारी प्रेरणात्मक जीवन

कभी कभी संसार में ऐसा भी होता है कि अत्यन्त दुष्ट एवं अत्याचारियों के यहाँ सज्जन तथा दिव्य आत्माओं का जन्म हो जाता है। भक्त प्रह्लाद भी ऐसे ही तामसिक वृत्तियों के सेनापति हिरण्यकश्यपु के घर जन्मे थे। उनकी माता का नाम कयाधु था। जब हिरण्यकश्यपु घोर तप के द्वारा अपनी भौतिक शक्तियों की साधना कर अपने को एकछत्र सम्राट बनाने के उद्यम में लगा हुआ था। नारद जी ने कयाधु को अपने आश्रम में रखकर निर्मल भक्ति एवं सत्य धर्म का उपदेश दिया था। उस समय प्रह्लाद माता के गर्भ में थे। गर्भस्थ शिशु पर मुनि जी के उपदेशों का अप्रतिम प्रभाव पड़ा।

यथा समय बालक प्रह्लाद का जन्म हुआ। प्रह्लाद सबसे छोटे होते हुए भी गुणों में सबसे बड़े थे। वे सौम्य स्वभाव, सत्य प्रतिज्ञ, सन्त प्रकृति, जितेन्द्रिय एवं सबका आदर करने वाले थे। गरीबों पर विशेष स्नेह रखते थे। अपने इन गुणों के कारण सबके प्यारे बनते गये। खेलकूद को छोड़कर उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति भगवान की भक्ति में थी, किन्तु दूसरी ओर उनके पिता अपने भाई हिरण्याक्ष की मृत्यु के कारण भगवान की सत्ता से एवं उस समय के बड़े-बड़े राजाओं से द्वेष करते थे। एक बार हिरण्यकश्यपु ने अपने पुत्र प्रह्लाद को गोद में बैठाकर बड़े प्यार से पूछा- पुत्र संसार में तुम्हे सबसे अच्छा क्या लगता है? हिरण्यकश्यपु सोचता था कि वह कहेगा कि पिताजी मुझे सबसे अच्छे आप लगते हैं, लेकिन वह आश्चर्यचकित हो गया जब उसने कहा कि मुझे प्रभु की भक्ति में मन लगाना अच्छा लगता है, यह सुनकर हिरण्यकश्यपु क्रोध से जल उठा, क्योंकि ईश्वर का नाम लेना तो उसकी दानवी प्रवृत्तियों के खिलाफ था। अपने सेवकों और राज्याधिकारियों को उसका स्पष्ट आदेश था कि राज्य में जहाँ धर्म-कर्म हो, वर्णाश्रम धर्म का पालन हो, वह सब नष्ट कर दो-

विष्णुर्द्विज क्रिया मूलोयज्ञो धर्ममय पुमान्।
देवर्षिपित्भूतानां धर्मस्य च परायणम्॥

अध्याय 2/स्कन्दपुराण 7/ लोक11

यत्र यत्र द्विजा गावो वेदा वर्णाश्रमाः क्रियाः॥
तं तं जनपदं यात सन्दीपयत वृश्चतः॥

अध्याय 2 /स्कन्दपुराण 7/ लोक 2

तदनन्तर उसके अनुचरों ने नगर के गाँव के गाँव उजाड़ दिये, ऋषियों के आश्रम नष्ट कर दिए-

इति ते भर्तृ निर्देशमादायशिरसा आदृताः।
तथा प्रजानां कदनं विदधुः कदन प्रियाः॥
पुरग्रामव्रजोद्यान क्षेत्रारामाश्रमाकरान्।
खेटर्खवटघोषां च ददहुः पत्तनानि च॥

अध्याय 2/स्कन्दपुराण 7/ लोक 13-14

वस्तुतः राक्षस प्रवृत्ति के मनुष्य स्वभाव से ही दूसरों को सताकर सुखी होते हैं। वे जनता का नाश करने लगे। इस प्रकार हिरण्यकश्यपु का राज तपने लगा, किन्तु अपने पुत्र प्रह्लाद की ओर से वह चिन्तित रहता था। प्रह्लाद को पढ़ने विद्यालय भेजा गया। गुरु राजा के सेवक और पराधीन थे। बालकों को राजनीति और अर्थनीति की शिक्षा के साथ-साथ हिरण्यकश्यपु की विचारधारा का प्रचार करते थे। प्रह्लाद पर माता के नारद मुनि के आश्रम में निवास के कारण आध्यात्मिक संस्कार इतने गहरे जमे हुए थे कि वे गुरुओं को ही सत्य मार्ग बताने लगे। यह सुनते ही हिरण्यकश्यपु ने प्रह्लाद को गोद से उठाकर पटक दिया। युवक प्रह्लाद अपने पिता के राज्य उत्पीड़न से दुःखी था, उसने पिता की सत्ता को अस्वीकार कर लोगों को दया व ईश्वर भक्ति से अवगत कराया। सब दैत्य भाव त्यागकर प्रेम व दया भाव से व्यवहार करें इससे ही ईश्वर प्रसन्न होते हैं, समझाया। यथा-

तस्मसत् सर्वेषु भूतेषु दयां कुरुत सौहृदम्।
आसुरं भावं उन्मुच्य यया तुष्यत्यधोक्षजः॥

अध्याय 6/स्कन्दपु07/ श्लोक 24

दानव बन्धुओ! समस्त प्राणियों को अपने समान समझकर, सर्वत्र विराजमान, सर्वशक्तिमान भगवान का स्मरण करो। वह अपने साथियों व प्रजा से कहता कि तुम प्रभु पर श्रद्धा लाओ। मेरे समान उसकी भक्ति में मन लगाओ।

हि सर्वेषु भूतेषु भगवानस्त ईश्वरः।
इति भूतानि मनसाकामैस्तैः साधुमानयेत्॥

अ0 7/स्कन्दपु0 7/ लोक 32

इसी प्रकार गुरु जम्भेश्वर ने सम्पूर्ण मानवता को एक राह पर लाने के लिए तथा विभिन्न धार्मिक मतों व पंथों में एकता स्थापित करने के लिए ऐसे निर्गुण विष्णु की संकल्पना प्रदान की जो सभी जातियों व धर्मावलम्बियों को स्वीकार हो। उन्होंने वैदिककालीन व्यापक विष्णु के नाम को जपने को कहा-

ओम् विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी। जो मन मानै रे भाई। दिन का भूला रात न चेता। कांय पड़ा सूता आस किसी मन थाई। हिरदै नाम विष्णु को जंपो। हाथे करो टवाई। (शब्द 97)

उनका विष्णु जो तीन लोकों व सात पातालों वाला है। वह विष्णु सभी युगों में अवतरित होकर धर्म की स्थापना करता है तथा अधर्मियों को विनष्ट करता है।

विष्णु-भण अजर जरीजै। धर्म हुवै पापां छूटीजै। हरिपर हरि को नीम जपीजै।
हरियालो हरि आण हरुं। हरि नारायण देव नरुं। आशा सास निरास भईलो। पाईलो मोक्ष दवार खिणूं॥

(शब्द 102)

आगे गुरु जम्भेश्वर जी मानव को कहते हैं-

कॉय रे मुरखा तैं जन्म गुमायों। भुंय भारी ले भरुं। जा दिन तेरै होमनै जापनै तपनै किरिया। गुरु न चीन्हों पंथा न पायों अहल गई जमवारुं। तांती बेला ताव न जाग्यो। ठाढ़ी बेला ठारुं। बिंबै बैला विंष्णु न जंप्यो। तातैं बहुत भई कसबारुं।

(शब्द 13)

आगे गुरु महाराज कहते हैं कि भगवान के दर्शन गुरु ही कराते हैं। गुरु के उपदेश ही ज्ञान कराते हैं-

गुरु कै शब्द असंख्य प्रबोधी। खारसमंद परीलो।

(शब्द 29)

गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पुरोहित। गुरु मुख धर्म बखाणी। जो गुरु होयबा सहजे शीले शब्दे नादे वेदे। तिहिं गुरु का अलंकार पिछाणी। (शब्द 1)

गुरु के बिना ज्ञान नहीं, मुक्ति नहीं। इस बात को गुरु महाराज प्रह्लाद और हरिश्चन्द्र के माध्यम से समझाते हैं-

गुरु बिन मुक्त न जाई। पंच क्रोड़ी ले प्रह्लाद उतरियो। जिन खरतर करी कमाई।
सात क्रोड़ी ले राजा हरिश्चंद उतरियो।
तारादे रोहिताश हरिश्चन्द हाटोहाट बिकाई।
नव क्रोड़ी राव युधिष्ठिर ले उतरियो।
धन-धन कुन्ती माई।
बारा क्रोड़ समाहन आयो।
प्रह्लादा सूं वाचा कबलजु थाई। (शब्द 97)
सो प्रह्लादा गुरु की बाचा बहियों।
ताका शिखर अपारुं। ताको तो बैकुंठे वासो।

(शब्द 58)

इस प्रकार भक्त प्रह्लाद ने अपने पिता को समझाते हुए कहा कि छोटे से छोटे, बड़े से बड़े जीव सब भगवान के आश्रय में हैं। वह सर्वशक्तिमान प्रभु सर्वत्र हैं। पिताजी आप अपना असुर भाव छोड़ दीजिए। मन में सबके प्रति समता का भाव लाना ही भगवान की भक्ति है।

यह सुनकर हिरण्यकश्यपु बोला- इस संसार में मेरे सिवाय कोई भगवान नहीं है क्या तेरा भगवान इस राजसभा के खम्भे में भी है। प्रह्लाद ने कहा भगवान कण-कण मे विद्यमान हैं लेकिन चर्म चक्षुओं से नहीं दिखते। प्रह्लाद को अपनी बात पर अडिग देखकर हिरण्यकश्यपु क्रोध से पागल हो उठा तथा तलवार उठाकर जैसे ही प्रह्लाद पर वार करना चाहता था कि तभी दैत्य सेनापतियों को भी कंपा देने वाले अद्‌भुत और अपूर्व घोर शब्द के साथ खम्भे में से नृसिंह रूपधारी विष्णु भगवान ने प्रकट होकर हिरण्यकश्यपु का वध कर दिया। भक्त प्रह्लाद की जय-जयकार हुई। जब-जब संसार में अधर्म और दुष्टों का दुराचार होता है भगवान दुष्टों का नाश करने के लिए अवतार लेते हैं। यही श्री कृष्ण ने गीता में भी कहा है-

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,
तदा-तदा हि आत्मानं सृजाम्यहम्।

ईश्वर भक्ति और विष्णु का नाम ही एकमात्र सत्य

है, यही गुरु महाराज ने अपने शब्दों के माध्यम से मानव जाति को सन्देश दिया।

यदि इस कथा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा उस समय की राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक अवस्थाओं के परिप्रेक्ष्य में देखें तो वह आस्तिक प्रवृत्तियों और नास्तिक प्रवृत्तियों का झगड़ा था। सत्ता परिवर्तन का युद्ध था। भौतिकवाद और अहंवाद से अध्यात्मवाद की लड़ाई थी। दूसरे शब्दों में शुद्ध राष्ट्रक्रान्ति थी क्योंकि राजनैतिक दृष्टि से हिरण्यकश्यपु एकछत्र सम्राट बना हुआ था। समस्त छोटे बड़े राजा उसके आक्रोश से पीड़ित थे। अपने स्थानों को छोड़कर भयभीत होकर छिपे फिरते थे। बड़े-बड़े नगर व गाँव उसने उजड़वा दिये थे।

धार्मिक दृष्टि से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से मोक्ष का तो नाम ही नहीं था। काम और अर्थ का सेवन होकर धर्म गौण हो गया था। अखण्ड भौतिकता का साम्राज्य था। ईश्वर के प्रति अश्रद्धा का भाव उत्पन्न किया जा रहा था। ईश्वर की सर्वव्यापकता खतरे में थी।

समाजिक दृष्टि से समाज का प्रत्येक वर्ग पीड़ित था। ब्राह्मण व क्षत्रिय वर्ग की दुर्दशा थी। भौतिक साधनों की उपलब्धि से समाज में समान भाव नहीं था। मन, बुद्धि, इन्द्रिय, प्राण, देह, धर्म, धैर्य, लज्जा, सम्पत्ति, तेज, स्मृति तथा सत्य सबका पतन हो गया था। वर्णाश्रम की मर्यादा का लोप था।

इस प्रकार आर्यत्व का विनाश और अनार्यत्व का खुला प्रचार व प्रसार हो रहा था। सनातन वैदिक पथ पर कुठाराघात हो रहा था। धर्मात्मा लोग व निरीह प्रजा बड़े संकट में थी। हिरण्यकश्यपु के दुर्दान्त अत्याचारों से प्रजा तंग थी। समस्त राज्याध्यक्ष उसके उग्र स्वभाव से पीड़ित थे। वह पुत्र पर ही अत्याचार कर रहा था, यह सब देखकर अनेक राज्याधिकारी व प्रजाजन प्रह्लाद समर्थक होते जा रहे थे। भगवान की भक्ति से प्रह्लाद की आत्मिक शक्ति इतनी प्रबल हो गई थी कि उसने उस भयंकर वातावरण में भी अपनी बात कहने का प्रबल प्रयास किया और पिता से लड़ाई ठान ली। सत्य ही क्रान्तिकारियों और धर्मवीरों ने क्या-क्या कष्ट नहीं झेले, पर कभी सिर नहीं झुकाया।

अत: आओ, इस नास्तिकता और अश्रद्धा के बढ़ते हुए युग में भगवान की निर्मल भक्ति और उसमें परम श्रद्धा रखने का अटल व्रत लेकर पापों, दुष्कर्मों, दुर्भावनाओं और दुष्कामनाओं की होली जला डालें। सदाचार, संयम, सेवा और समानता का व्रत लेकर जीवन को ऊँचा और महान बनाएँ व श्रेष्ठ कर्मों द्वारा संसार को आल्हादित कर दें।

- डॉ. वीना बिश्नोई
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
मो.: 7351666621

हठ हरणांकुस हालियो

मैं भरण मन रंग।
सिधी विचारै सामठी ,
अनीत उपाइ अंग ॥1 ॥

गिणाण गुर गुण गरज रा,
अंतस भरे अहंम।
पृथ्वी पति री पागड़ी,
विचरण वरण वहंम ॥2 ॥

भ्रात महिमा सुण भलकी
हठ हरणाकुश हेत।
जमर भतीजो जांचणै,
सतरो नाटक सेत ॥3 ॥

पहलाद प्रभु पालणै,
निरभय खैलै नेम।
पिता पुत्र विच पनपियो,
अंतर तामस ऐम ॥4 ॥

पहर तमस रा पहरणा,
हठ हरणाकुश हाण।
पुत्र पछाड़ण पापियै,
कोई न रखी काण ॥5 ॥

अम्ब अंहम उतार दै,
सर्षि्ट विचरण सुचंग।
जीव दया भल जाचणौ,
ईस विचारण अंग ॥6 ॥

-अम्बादान चारण 'देवल'
गाँव आलमसर, तह. चोहटन,
जिला-बाड़मेर
मो.: 8949893055

पत राखी प्रहलाद री

प्रह्लाद भलां पाकियौ, धरणी राखण ध्यान।
हन्यौ हिरणाकश्प नै, संतां सारण शान॥
लैय अवतरण लोक में, काट्या घणां कलंक।
होळी नैं होमाय कर, हरि रह्यो निकलंक॥
किया प्रह्लादे कामड़ा, पत परमेसर पाल।
हरि री किरपा कारणै, बांको हुवौ न बाल॥
बळती अगन उबारियौ, परभू पत परियाण।
किरपा ईसर कारणै, हुवौ जरा नह हाण॥
धार रूप नरसींह नै, दाणव हणियो द्वार।
रात रही ना दिन रह्यौ, कर्यो काम किरतार॥
दुख मेटण दुनियाण रौ, धरा अवतरै आप।
निरभय नर सिंह नाम सूं, प्रथमी हरियौ पाप॥
सारण कारज सेवकां, नरसिंह कीनो नाम।
दुख मेटण प्रहलाद रो, अचरज कीनो काम॥
पत राखी प्रहलाद री, संकट वेला स्याम।
सादै आयौ सांवरौ, करण सेवकां काम॥
कीरत भल किरतार री, भणै गुणै विद्वान।
भगतां पायौ भाग सूं, घट में कर गुणगान॥
सदगुण सारण सेवकां, कई कराया काम।
नाम भलो नरसींग रौ, सदा भणै संग्राम॥

-संग्राम सिंह सोढा, व अ
सचियापुरा, माणकासर, जिला बीकानेर
मो.: 9983181510

बस यह काम हे प्रह्लाद कर

एक बस यह काम हे प्रह्लाद कर।
है समय निज ईष्ट को अब याद कर॥
हिरण्यकश्यप हर दिशा में हैं खड़े।
मान्यता तेरी मिटाने पर अड़े।
शक्तिशाली, धूर्त भी चालाक भी,
क्रूर पहले से अधिक, ज्यादा बड़े।
कर रहे भयभीत भीषण नाद कर॥
कर चुके वे दैव का आह्वान भी।
पा चुके अद्भुत अमिट वरदान भी।
दम्भ उनका सातवें आकाश पर,
हो चुके घोषित स्वयं भगवान भी।
चाह है सब कुछ रखें बर्बाद कर॥
दानवी सब शक्तियाँ हैं जोश में।
अत्यधिक आवेश में, आक्रोश में।
और सज्जन वृन्द सहमे से खड़े,
काँपते हैं भीति के आगोश में।
है समय नरसिंह से फरियाद कर॥
तीक्ष्ण कर नख-दन्त को फिर आईए।
गर्जना भीषण पुनः कर जाइए।
छोड़ जड़ता आज खम्भा फाड़ कर,
प्रलयकारी रूप फिर दिखलाइए।
वक्ष चीरो दुष्ट का उन्माद कर॥

-जोगेश्वर गर्ग जालोर
पूर्व मंत्री, राजस्थान सरकार

भगतो तारण भगवान

सदाय रहयो ज संग।
पुकार सुण प्रहलाद री
आय बसयो हरी अंग॥1॥
नरसिंगे रो नाम सुन
कांपत असुरन काय।
हरि समरण घण हेत सूं
प्रह्लाद जन्म जद पाय॥2॥
कियो याद किरतार नो
सेवक काज सदाय।
प्रकटयो थम्भ परमेशर
वजूद देत बताय॥3॥
पावक तन पसरावतों
होळी मन हरषाय।
अगन तन ऊजळावतों
लेस न लागी लाय॥4॥
नरसिंग रूप नारायण
भयो बहुत विकराळ
अंत कियो ज उतपात रो
चीरयो नख चिरताळ॥5॥
प्रह्लाद पुकार परमेशर
सुणे ज लीनी सार।
धरयो रूप धरणी पर
असुर मारण अवतार॥6॥
हिरणाकश मारण हरी
अस्त्र शस्त्र बिना आय।
दुखड़ो मेटण दुष्ट रो
अजब रूप अपनाय॥7॥
देख्यो थम्भ मो दयानिधि
सूक्षम रूप सहाय।
प्रकट भयो परमेशर
कीड़ी रूप कहाय॥8॥
डक डक हँसती डाकणी
प्रह्लाद अंक मो पाय।
बू गई पूरी बापड़ी
हुरफ मुख सूं हाय॥9॥
तारया हे अर तारसी
भगत कई भगवान।
कवि राजन कर बद्ध कहे
पुकारो जब लग प्राण॥10॥

-राजेन्द्रान चारण
'कवि राजन'
गाँव-झणकली,
बाड़मेर (राजस्थान)

नरसिंह अवतार

हिरणाकुश नाम का एक जातुधान था।
रोम रोम छल भरा और अभिमान था।
मानता न किसी को बनता महान था।
आसुरी प्रवृत्ति का करता गुणगान था।
पूजन नहि करे कोई यह फरमान था।
स्वयं को सदा वो कहता भगवान था।

पुत्र प्रहलाद उसका हरि नाम जपता था।
सुबह शाम स्वर्ण सम आग में तपता था।
हरि प्रेम पुत्र का उसको नहि भाता था।
यातनाएं देता उसे नित्य वो सताता था।
मारने को षडयन्त्र रोज वह रचाता था।
भाग हरि स्वयं प्रहलाद को बचाता था।

हारकर थक कर बहन बुलाई उसने।
मन की दुविधायें सभी बताई उसने।
बैठके होलिका संग नीति बनाई उसने।
मारने को प्रहलाद चिता सजाई उसने।
होलिका संग भेज पुत्र आग लगाई उसने।
पुत्र बचा बहन जली देखी प्रभुताई उसने।

होकर निराश हिरणाकुश खिसिआया।
सभी सलाहकारों का दरबार लगाया।
जंजीरों से बाँध पुत्र को बुलबाया।
तप्त अग्नि खम्बों से उसको बँधवाया।
पुत्र प्रहलाद ने भी हरि गान गाया।
ले कृपाण पुत्र को मारने वो धाया।

मैं हिरणाकुश अमर सदा मौत भी मुझसे हारी।
देकर अब आवाज बुला ले देखूँ कहाँ बिहारी।

अग्नि तप्त खम्बे फटे होती जय जय कार।
प्रगट हुए ले प्रभु जी नरसिंह का अवतार।

हिरणाकुश को मार कर भेज दिया निज धाम।
भक्त प्रहलाद को अंक दे अमर कर दिया नाम।

-आदेश कुमार पंकज
रेणुसागर सोनभद्र
उत्तर प्रदेश

नरसिंहावतार : चौपाई

लखि प्रह्लाद के संकट भारी।
श्री हरि ने तब युक्ति विचारी॥
प्रगटे रूप लिए नरसिंह का।
दैत्य राज का माथा ठनका॥
नर नारी सब संकट भांपे।
हिरण्यकश्यप मन में कांपे॥
धड़ नर का अरु शार्दुल का मुख।
कबहु न देखा अपने सम्मुख॥
भागें सबहि भये भय आतुर।
क्या मूरख या कोई चातुर॥
नख पैने अरु दांत विशाला।
देह भयंकर अति विकराला॥
सुनि दहाड़ सब नगरी डोली।
कांप उठे उर अटकी बोली॥
दैत्य राज का मारक आया।
कदम धरे ज्यों भवन हिलाया॥
कर द्वय जोड़ खड़े मुस्काकर।
दानव सुत हरि सम्मुख पाकर॥

-अंकिता कुलश्रेष्ठ, हिसार

नरसिंहावतार पर (रोला छंद)

विष्णु भक्त प्रह्लाद, नयन के तारे जिनके।
तक पापी अपराध, बाप के तम से भिनके॥
उमर बहुत थी छोट, प्रतिज्ञा कर चले भारी।
रटन किए हरि नाम, राक्षसी मरजी हारी॥
समझाता था रोज, पुत्र को हिरण्यकश्यप।
कर नहिं पाया खोज, खम्भ में भी प्रभु पादप॥
बाँध दिया निज लाल, मारने चला कसाई।
निकला सिंह विशाल, अजब धरि रूप गुसाँई॥
राक्षस का है अंत, संत कह गए जगत से।
गौतम गरिमा पंथ, कंत खुश रहें भगत से॥

-बहन अनिता जी
महातम मिश्र, गौतम गोरखपुरी

बिश्नोई लोकगीतों में होली

होली का त्यौहार बसंत के आगमन, ठंड की समाप्ति एवं रबी फसल के पकने का प्रतीक है। इस त्यौहार के मूल में एक पौराणिक कथा है, जो भक्ति की विजय एवं पाप के विनाश की ओर संकेत करती है। यह त्योहार फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है। हिन्दू समाज का अभिन्न अंग होते हुए भी बिश्नोई पंथ का अपना अलग वैशिष्ट्य है। इसी वैशिष्ट्य के कारण बिश्नोई समाज में होली के त्योहार को अलग प्रकार से मनाया जाता है। बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी में अपने अवतार लेने के सम्बन्ध में एक मौलिक बात प्रकट की है। उनके अनुसार भक्त प्रह्लाद के कारण भगवान ने नृसिंह का अवतार लिया था। उस समय भक्त प्रह्लाद के तैतीस करोड़ अनुयायी थे, जिनमें से पांच करोड़ अनुयायियों का वध हिरणाकश्यप ने कर दिया था। हिरणाकश्यप के वध के बाद प्रह्लाद ने अपने तेतीस करोड़ अनुयायियों के उद्धार का वचन नृसिंह भगवान से मांगा था। भगवान ने चारों युगों में इन तैतीस करोड़ अनुयायियों के उद्धार का वचन प्रह्लाद को दिया था। जिसमें से पांच करोड़ सतयुग में प्रह्लाद के साथ सात करोड़, त्रेता में राजा हरिश्चन्द्र के साथ तथा नौ करोड़ जीवों के उद्धार द्वापर में युधिष्ठिर के साथ कर दिया था। शेष बारह करोड़ जीवों के उद्धार हेतु गुरु जाम्भोजी को कलयुग में आना पड़ा। इस वृतांत के अनुसार भक्त प्रह्लाद से गुरु जाम्भोजी तक की दीर्घ परम्परा का पता चलता है। इसी परम्परा का वर्णन समाज के कलश पूजा मंत्र में भी किया गया है। इसी परम्परा के आधार पर बिश्नोई समाज को प्रह्लाद पंथी कहा जाता है। भक्त प्रह्लाद के साथ विशिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण जब बिश्नोइयों को यह पता चलता है कि होलिका द्वारा प्रह्लाद को आग में जलाया जाएगा तो बिश्नोई होली की सन्ध्या को शोक मनाते हैं, जिसके फलस्वरूप स्वादिष्ट भोजन न करके खीचड़े का भोजन करते हैं। तब सभी लोग प्रसन्नता प्रकट करते हैं जिसके फलस्वरूप सामूहिक हवन करते हैं और पाहल किया जाता है, जिसे सभी ग्रहण करते हैं। इसलिए समाज में होली के पाहल का विशेष महत्व है।

प्रह्लाद पंथी होने के कारण बिश्नोई समाज में होली के त्योहार का विशेष महत्त्व है और उसी महत्त्व के कारण समाज में प्रचलित होली के गीत भी विशिष्ट प्रकार के हैं। इन गीतों में समाज के विभिन्न प्रकार के रीति-रिवाजों का वर्णन हुआ है। यहां अन्य लोग होली के अगले दिन एक-दूसरे पर रंग डालते हैं वहां बिश्नोई गुरु जाम्भोजी के मन्दिर या चौकी पर एकत्रित होकर हवन करते हैं एवं पाहळ ग्रहण करते हैं। एक-दूसरे पर रंग डालने की प्रथा से समाज दूर रहता आया है। इसी कारण बिश्नोई समाज में होली गीतों में रंग खेलने का वर्णन नहीं है। यह बिश्नोई लोकगीतों की बहुत बड़ी देन एवं विशेषता है। ऐसे लोकगीत ही भारतीय लोक साहित्य समृद्धि में सहायक हो सकते हैं तथा भारतीय संस्कृति का विकास करके उसे नवीन बना सकते हैं। आज के इस पर्यावरण प्रदूषण के युग में बिश्नोई समाज में रंग न खेलने की प्रथा से पर्यावरण को शुद्ध रखा जा रहा है और अन्य लोगों को भी बिश्नोई समाज की इस प्रथा से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए जिससे पर्यावरण शुद्ध रह सके और जल की बचत हो सके।

बिश्नोई समाज में होली से सम्बन्धित अनेक गीत प्रचलित हैं, जिनको लड़कियां होली से दस-पन्द्रह दिन पूर्व गाना प्रारम्भ कर देती हैं और होली की रात्रि तक गाती रहती हैं। इन गीतों के साथ लड़कियां गोबर के ढोकलिए बनाने प्रारम्भ कर देती हैं। होली की संध्या को लड़कियां एवं स्त्रियां मिलकर गीत गाती हुई जाती हैं तथा इन ढोकलियों की माताओं को होली में डाल आती हैं। बिश्नोई समाज में होली के दिनों में लड़कों द्वारा दड़ी खेलने का भी रिवाज रहा है, जिसका वर्णन होली के गीतों में हुआ है।

ओ कुणा खेलै ए होळी गै बाग, किर मटियो ले।
रामू खेलै ए होळी गै बाग, किरमटिके ले।
बीरै गै हाथ में सोनै गो रोडियो, किरमटियो ले।

आगे गीत में खेलने वाले की वेश-भूषा, वंश एवं सम्बन्धियों का वर्णन किया गया है। होली की प्रतीक्षा सभी को रहती है। लड़कों के दड़ही खेलने की तथा विवाहित लड़कियों को पीहर में पहुंचकर गीत गाने की प्रतीक्षा समाज में होली गीतों में अभिव्यक्त हुई है।

माह गयो फागणा आयो, कद आवै ए होळी।[1]

विवाहित लड़कियां पीहर में आकर होली के आनन्द को आत्मसात करने के लिए ससुराल में भाई की प्रतीक्षा करती रहती है। इसलिए होली के दिनों में उनकी दृष्टि पीहर के रास्ते पर लगी रहती है-

डागळिय चढ जाऊं ए, जे कोई दीसै आवन्तो,

जावन्तड़ो बटाऊ, आवन्तड़ो मेरो वीर।[3]

प्रतीक्षा की इस घड़ी में जब वास्तव भाई बहिन को लेने के लिए पहुंचता है तो बहिन के आनन्द की कोई सीमा नहीं रहती है। अत्यधिक प्रसन्नता के कारण वह भाई का बड़े उत्साह के साथ आदर-सत्कार करती है और उससे पूछती है-

बीरा थम्यो है तो ठेसी रे, ठंडी छीइयां खजूर गी।[4]
बीरा तोस्यो है तो पीवी रे, कोरो मार घुमार गो।
बीरा भूखो है तो जीमी रे, चावळ सेदयू अजळा।
बीरा लूखा है तो मांगी रे, घी बरताऊ टोक।

लोक गीतों की यह प्रमुख विशेषता होती है कि उनमें कभी भी जीव का एकांगी वर्णन नहीं होता। उनमें सामाजिकता अवश्य होती है। यहां भी भाई-बहिन अकेले नहीं है। संयुक्त परिवार है जिसके कारण बहिन को बाहर गई हुई सास-नणद के आने का डर लगा रहता है। वह सोचती है कि सास भाई के सामने ही उसे डांट सकती है। इसलिए वह भाई से कहती है।

बीरा चट-चट जीभी रे, सासु नणद लड़ोकड़ी।[5]
बीरा मनै दयली गाळ रे, तनै दयती ओ कवो।

इस गीत में एक ओर सास बहू तथा ननद-भाभी के वैरभाव का तथा दूसरी ओर भाई-बहिन के अटूट प्रेम का चित्रण हुआ है। इसी प्रेम के कारण बहिन दूसरों के सामने भाई की प्रशंसा करती है पर भाई का खाली हाथ आना बहिन को बुरा लगता है। इसलिए वह भाई को बड़ी चतुराई से कहती है।

बीरा लाल पड़ोसण पूछै रे, थारो बीरो कांई-कांई लायो।[6]
बाई मेहन्दी गो कोयळियो रे, मांय कटुम्बा कांजळी।
बाई पहरण नै पोटली रे, ऊपर बोरंग चूंदड़ी।
अतरी करी बीरा सोभा रे, लायो न टकै गी कांजळी।

जीवन की सच्चाई लोक गीतों की आत्मा है। इसी सच्चाई की अभिव्यक्ति के कारण लोकगीत समाज को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं। इस गीत में भी जीवन का सच्चा रूप चित्रित हुआ है। इसके साथ ही इसमें बिश्नोई समाज में होली पर बेटी को ससुराल से पीहर में लाने की परम्परा का भी वर्णन हुआ है जिससे यह स्पष्ट होता है कि लोक गीतों में जाति विशेष का इतिहास सुरक्षित रहता है।

बिश्नोई समाज में होली के समय अधिकांश बेटियां ससुराल से पीहर में आ जाती हैं और वे रात्रि में किसी एक स्थान पर एकत्रित होकर होली के गीत गाती रहती हैं। कई दिनों बाद मिलने के कारण वे गीत गाने के साथ-साथ सुख-दुख की बातें भी करती रहती हैं, जिससे उन्हें समय का भी ध्यान नहीं रहता। अचानक जब किसी को समय का ध्यान आता है तो वह घर चलने की बात कहती है और साथ ही यह गीत गाने लगती है। यह गीत रात्रि में सब गीतों के अन्त में गाया जाता है जिससे घरवालों को भी यह अनुमान हो जाता है कि अब लड़कियां घर आने वाली हैं।

चांद चढयो गिगनार, किरत्या ढळ रही है जी, ढळ रही है।[7]
उठ बाई रामी घर पधार, बाबोजी बदयला गाळ,
माऊं जी बरजैला जी, बरजैला।

बिश्नोई समाज के होली गीतों में सबसे सरल एवं छोटा गीता डिबोली जिसे प्राय: छोटी लड़कियां ही गाती हैं।

डाई ए डिबोली, ओ नाळ कठै न जाय, डाई ए डिबोली।[8]

बिश्नोई समाज में होली के दिनों में लूर गाने की भी परम्परा है। लूर का अर्थ है- नृत्यमय गीत।

इस तरह बिश्नोई समाज के होली गीतों में होती है। त्योहार को मनाने का आधार त्योहार से सम्बन्धित रीति-रिवाज, सामाजिकता, मानवीय सम्बन्धों एवं होली के त्योहार के प्रति समाज की अवस्था आदि का चित्रण किया गया है जिससे बिश्नोई समाज में होली के त्यौहार का वैशिष्ट्य प्रतिपादित हुआ है।

संदर्भ-

1. बिश्नोई लोकगीत- पृ. 129
2. वही - पृ. 127
3. वही - पृ. 127
4. वही - पृ. 127
5. वही - पृ. 127
6. वही - पृ. 127
7. वही - पृ. 130
8. वही - पृ. 129

-डॉ. बनवारी लाल सहू
1/73, प्रोफेसर काफलोनी, हनुमानगढ़ टाऊन
मो.: 9414875029

सन्त साहब राम जी कृत जंभसार में प्रहलाद चरित्र

अब ही सनातन जन्म सुनाऊं। बारहिं क्रोड़ जीव गति पांउ।
ताहि लेन आएउ जभेश्वर। अवि गति अलख परम परमेसुर।
प्रिथम निमत आवन करि ऐहा। खम्भ फार भई नरसिंघ देहा।
अब एक कथा कहौ मैं गाई। सुनहैउ संत सकल मनलाई।
अष्ट सिद्धि नव निधिवर, खरी रहै हरिद्वार।
घर-घर मंगल अति घना, लाहहिं पदारथ चार।
पहरैबान पारखद ठाढ़े। अस्त्र च्यारू भुजा गहि गाढ़े।
पंचमी पोल विजै अरू जहै। जानन देवै आज कौउ अहै।
गुंन खानी काह कहू बखानी। पांच वर्ष के सदैव रहानी।
कह सनकादि सुनह हूँ भाई। हम तो दर्शन जहें ही सदाई।
आज कुबध काह उपजी तुमही। दर्शन जात रौक दिये हमहीं।
नग्न करूप दिगम्बर भेखा। विस्नुंधाम मति करहूं प्रवेशा।
एहि सुन सिनकादि रिष व्यापी। अस्वर जोनि पावहूदोउ पापी।
ठंहा चहियउ सजन करि वासा। मृत लोक जाय करहु प्रकाशा
सनकादि इंद्र अस्तुति करी। तब चितिये प्रस्न होय हरि।
प्रभु निज भक्तां की पछकरी। हंस के हरि श्राप दियों जु धुरी।
सन्तन को अपमानही कीन्हौ। तिनका फलि ततकालहि लीन्हौ।
आसुर जोनि अवस एहि पावहि। तुमरीहि कृपा बहुरइहां आवहि।
जय विजय प्रति विस्नुं असभाखै। सन्त श्राप अधिक करि राखै।
म्रित मण्डल जनमत भऐ, दती उदर में आंन।
जुगल जन्म प्रिथी परलएड। हिरूण्यकसिप हिरणाकुस भयेउ।
जनमत कष्ट भएउ जग सारै। ना कोउ वेद पुरान विचारै।
धर्म सेत मरजादा गऐ हैं। पृथ्वी जाय रशातल रहे है।
ब्रिहमादि शिव देव पुकारा। जम्भ हंस सुकर तन धारा।
हिरणाक्षहुं प्रभु मारके, कियेउ जम्भ सुरकाज।
पृथ्वी जल प्र थाप करि, भवन गये माहाराज।
हिरणाकुश जो शौक बहु कीन्हौ। माता प्रति ज्ञान अति दीन्हों।
मृत्यु कृया फिर करि घरि आए। हरि वेरी जान रीशाऐ।
गएउ दयत विस्नु रज धानी। मारउं विष्णु पिऊं जब पानी।
धर्म सनातन देहु उठाई। जीवत विष्णु तुरंत मरि जाई।
प्रथम उठावौ वेद पुराणा। धर्म यज्ञ करहहू सब हाना।
तप करने हिरणाकुश गएउ। होय प्रण ब्रिहमा वरं दएऊ।
दिव्य सत बरष अनु ट आधारा। मांग-मांग वर बहम उचारा।
हंस बोलेऊ दयतन के राई। दहुवर अमर अजर होय जाई।
ब्रिहमा विष्णु महेश न मरयहू। इक छितिराज अवनि प्रकरिहूं।
तोप तरवार तुपक नहहि लागै। शस्त्र वान देख मोहे भागे।
मरहू न रात-दिवस जल धारा। देव दनजु काहा दन्तु विचारा।
रात-दिवस मध्याहन न महिहूं। नार पुर्ष किनहुत नहिं डरिहू।
बाहर भीत्र मरू न देशा। किं पुरखादि नाग नृप शेषा।
कोऊ नही मान सकै प्रभु मोहू। इह वर दिजिय प्रण होहू।
सहि मस्तु कहि ब्रहम गएऊ। तुष्ठ पुष्ठ शरीर होय रहेऊ।
अजर अमर हुय घरही सिधाऐ। दयता कै मन हरष बढ़ाऐ।
कायाधू कै गरभ से, प्रगट गए प्रहलाद।
हरख बढ़यौं तिंहु लौक मैं, जनम भक्त को जान।
हिरणाकुश मन मैं यही जाना। पढण जोग्य प्रहलाद शयाना।
राज धर्म अरू नीत सिखाऊं। पढणै कूं प्रहलाद पठाऊं।
सुक्राचार्य बुलाए तबहि। सुत प्रह्लाद संग किये जबहि।
तब प्रहलाद वचन मुख बौले। अत्रं ज्ञान प्रगट कर खोले।
सत नाम मोहै लागे नीकौ। तत नाम सबहिन को टीको।
एक दिवस प्रहलाद कूं, राजा लियो बुलाय।
गोद राख पूछते भये, पढ़े पुत्र केहि भाय।
यह विद्या मेरे मन भावैं। जाते जनम बहुर नहीं आवैं।
इसे वचन प्रह्लाद सुनाए राजा क्रोध भये अचिरज आऐ।
विप्र वेद गोंविद संन्यासी। एतेहै सब विस्नुं उपासी।
हम इनकों विस्वास ही कीन्हौ। पुत्र हमारो बिगाड़हि दिन्हौ।
मम वैरी का ध्यान दृढ़ायौ। सुवन नहीं सुर शत्रु जायौ।
फिर प्रहलाद गुरु ग्रिह ल्याहे। स्याम दाम दण्ड भेद बताए।
तबहि तुरतं प्रह्लाद बुलाए। मधुर वचन कहि कै समुझाए।
मेरे भ्रात विस्नुं गहि मारे। तुम उनके नित नाम उचारे।
तजहि नाम जब हेहु राहु जो नहीं तजहे मारहेंहू आजू।
कह प्रहलाद त्रिलोक न भावै। राज पाट की कूनं चलावै।
लोह जंजीर आन कै भारै। जन प्रह्लाद कै पानी डारै।
जल के मध्य डबोयहु जाई। तब प्रमात्मा करि सहाई।
पकरेहु बाहुर कूप में दीन्हें। डारी धूर जतन बहु कीन्हे।
बहुर दियेऊ प्रबत तें डारी। इचरज ऐक भएउ तिणवारी।
परबत फूट महि मिल गएउ। दूग्ध फेंन सम प्रिथ्वी भएउ।
हिरणाकुश मन भएऊ अंदेशा। है कोऊ देव पुत्र के भेषा
कल्प-कल्प सम रजनी जावहि। मारे विना नीद नहीं आवहि।
भगनी दिशत सुनहु मम बीरा। मैं चहुं अब तुमरीहु पीरा।
काठ मड़ाग रु चिता सवारी। चहुं अब तुमरीहु पीरा।
काठ मड़ाग रु चिंता सवारी। चहुं दिश जतन किये अति भारी।
पकर प्रहलाद कियेउ कियेउ प्रवेशा। ढोढाव निकाल कर भेशा।
असुर कहै भूवा कहां भाई। प्रातः भएउ अजहू नहीं आई।
होरी जरेवर हुय गई खाखा। निज जन कू परमेसुर राखा।
तादि जो नर खेलहिं होरी। जाय नरक सब कुटम संजोरी।
नाम धुलेड़ी सबिहिन दीनों। हिरणाकुस भयों शोक नविनों।
एहि सुन राजा कोप कर, बोलेउ वचन करुर।
अन जल दिन गढ़ि गेरहूं, छाड़हूं। दयतराज अतशय रिशाऐ।

खम्भ पास तब तुरत बधाऐ। मारडं आज जरूर। काढ़ि खड़ग प्रहलाद हंकारे। कहां वस्तुम्हा विस्नुं तुम्हारे। घट-घट व्यापक है निह कामा। विस्नु बिना काको है धामा। मौमे तौमें खड़ग में, रहे खंभ के माहि। हरिबिन खाली है नही, तबकर कोप डराहिं। कर हंकार खम्भ प्रहारा। सिंघ शब्द जब भयेऊ गुंजारा। खम्भ फार प्रगटे नरसिंघा। लगे अशमान पूंछकर जंघा। कछुक काल प्रभु क्रिड़ा करेहु। पटकी दयत के प्रान निंहारेहु। सकल देव डरहे मनमांही। अस्तुति करनहु साम्रथ नांही। विधि प्रहलादहि वचन सुनाए। कर अस्तुति परहू प्रभु पाऐ। मोहूं दीन प्रभू दास तुम्हारों। कृपा दृष्टि करि मोहि निहारों। अस्तुति सुन प्रह्लाद की। प्रसन्न भए श्री राज। हस्त कवल समसिर धरे। मांग-मांग यह राज। मांगवै कहा दया निधि देवा। निस दिन करू तुमारी सेवा। मोर पितु कूं सदगति देहू। अघ जग जीव सुखी कर लेहू। तुमसे पुत्र भए है जाकै। कहा मुक्ति कौ शांसो ताकै। च्यार पहर चंहु जग की कहहै। तुमरेई संग संत सब अहहै। सतजुग तौ शनक के शाथा। त्रेता सनन्दन के तेहि हाथा। हरिचन्दराव सत्य सनकादि। शात क्रीड़ ले जहहिं परमादिक। द्वापर नूनत युधिष्ठिर सत ही। नेऊ क्रोड़ ले जहें मुक्ति हो। सत्य सनातन कलिजुग होई। लोहर नाम कहावै सोई। जब तब घर हंसा अवतरिहूं। पुरष अंस निज इंछया चरहू। घट घट जानहि घट घट लहहै। जंभ नांव ताही ते कहहै। बारह क्रोड़ जीव मोहे संग। यूं सब तिरहहि तुम प्रसंग। धन जननी जिन जनमियो प्रह्लाद भक्त सुध सन्त। पंच क्रोड़ ले उधरयौ, चल्यौ बिश्नाई पंथ।

सन्त साहब जी कृत इस प्रहलाद चरित्र का भावार्थ अनुसार सरल हिन्दी में इस प्रकार है :-

सतयुग की बात है एक बार ब्रह्माजी के मानस पुत्र सनक सनकादि जिन की अवस्था सदा 5 वर्षीय बालक की सी रहती है, घूमते हुए वैकुंठ लोक में जा पहुंचे वह भगवान विष्णु के पास जाना चाहते थे परंतु जय-विजय नामक द्वारपालों ने उन्हें बालक समझकर भीतर जाने से रोक दिया यह देख ऋषियों को क्रोध आ गया और उन्होंने साफ देते हुए कहा तुम लोगों की बुद्धि तमोगुण से अभिभूत है अत: तुम दोनों असुर हो जाओ तीन जन्मों के बाद तुम्हें इस स्थान की पुन: प्राप्ति होगी। ऋषि शापवश वही दोनों दिति के गर्भ से हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष के रूप में उत्पन्न हुए। हिरण्याक्ष को भगवान विष्णु ने वराह अवतार धारण करके मार दिया। भ्रातृवध से संतप्त हिरण्यकशिप देवताओं और दानवों को सब ओर अत्याचार करने के लिए आज्ञा देकर स्वयं महेंद्र पर्वत पर तपस्या करने चला गया। इधर हिरण्यकश्यपु को तपस्या निरत देखकर दैत्यों पर चढ़ाई कर दी। दैत्यगण अनाथ होने के कारण भागकर रसातल में चले गए गए। इंद्र ने राजमहल में राजरानी कयाधु को बंदी बना लिया, उस समय कयाधु गर्भवती थी वे उसे अमरावती की ओर ले जा रहे थे मार्ग में देव ऋषि नारद से उनकी भेंट हो गई। नारद जी ने कहा इसे कहां ले जा रहे हो? इंद्र ने कहा- देवऋषि इसके गर्भ में हिरण्यकशिप का अंश है इसे मार कर फेंक दूँगा। यह सुनकर नारद जी ने कहा- देवराज इस के गर्भ में जन्म लेने वाला बहुत बड़ा भगवतभक्त है इसे मारना आपकी बहुत बड़ी भूल होगी। अत: इसे छोड़ दो। नारद जी के कथन का कहा मानते हुए इंद्र कयाधु को छोड़कर अमरावती चले गए। नारद जी कयाधु को अपने आश्रम पर ले आए और उससे बोले बेटी! तुम यहां तब तक सुखपूर्वक निवास करो जब तक तुम्हारा पति तपस्या से लौटकर नहीं आ जाता। समय-समय पर नारद जी गर्भस्थ बालक को लक्ष्य करके तत्वज्ञान का उपदेश देते रहते थे। यही बालक जन्म लेने पर परम भागवत प्रह्लाद हुआ। जब हिरण्यकशिपु तपस्या से उठे और देवताओं में खलबली मच गई वे सब संगठित होकर ब्रह्माजी की शरण में गए और उनसे हिरण्यकशिप को तप से विरत करने की प्रार्थना की। ब्रह्मदेव हंसपर आरूढ़ होकर वहां आए जहां हिरण्यकश्यप तपस्या कर रहा था उसके शरीर को चींटियां चांट गई थी केवल अस्थिगत प्राण अवशेष थे और वह एक बाम्बी के आकार का दीख पड़ता था ब्रह्माजी ने उस बाम्बी पर अपनी कमंडल का जल छिड़का फलत: हिरण्यकश्यप अपनी असली रूप में आ निकला। तब ब्रह्म ने कहा बेटा ऐसी तपस्या तो आज तक न किसी ने की है और न आगे कोई करेगा। अब तुम अपना अभिष्ट वर मांग लो। यह सुनकर हिरण्यकश्यपु बोला- प्रभो!आप के बनाए हुए किसी प्राणी से चाहे वह मनुष्य हो या पशु प्राणी हो या अप्राणी देवता हो या या दैत्य अथवा नागादि मेरी मृत्यु न हो, भीतर-बाहर, दिन में रात्रि में, आपके बनाए प्राणियों के अतिरिक्त और भी किसी जीव से, अस्त्र-शस्त्र से, पृथ्वी -आकाश में कहीं भी मेरी मृत्यु न हो। युद्ध में मेरा कोई सामना ना कर सके, मैं समस्त प्राणियों का एकछत्र सम्राट हो जाऊं, देवताओं में आप जैसी महिमा मेरी भी हो और तपस्या एवं योगियों के समान अक्षय ऐश्वर्य मुझे भी दीजिए। ब्रह्मा उसकी तपस्या से प्रसन्न तो थे ही, अत: उसे मुंहमांगा वरदान देकर अंतर्ध्यान हो गए। हिरण्यकशिप अपनी राजधानी में चला आया। कयाधु भी नारद जी के आश्रम से राजमहल में आ गई। उसके गर्भ से भगवत रतन प्रहलाद उत्पन्न हुए। उनके चार पुत्र थे प्रहलाद उनमें सबसे

छोटे थे अत: उन पर हिरण्यकश्यप का विशेष स्नेह था। प्रहलाद गुरु गृह में शिक्षा पाने लगे। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण वे गुरु प्रदत्त शिक्षा शीघ्र ही ग्रहण कर लेते थे वह असुर बालकों को भी भगवत् भक्ति की शिक्षा देते। एक दिन हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को गोद में बैठाकर बड़े प्रेम से पूछा- बेटा अपनी पढ़ी हुई अच्छी से अच्छी बात सुनाओ। तब प्रह्लाद ने भगवत भक्ति की ही प्रशंसा की। यह सुनते ही हिरण्यकशिप क्रोध से आग- बबूला हो गया और उसने प्रह्लाद को अपनी गोद से उठाकर भूमि पर पटक दिया तथा असुरों को उन्हें मार डालने की आज्ञा दे दी फिर तो प्रह्लाद का काम-तमाम कर देने के लिए असुरों ने उन पर विभिन्न स्तरों का प्रयोग किया। परंतु वह सभी निष्फल हो गए। तत्पश्चात उन्हें हाथियों से कुचलवाया गया, विषधर सांपों से डसवाया गया। पुरोहितों से उन्हें मारने के लिए कृत्या राक्षसी उत्पन्न कराई गई, पर्वत की चोटी से नीचे डलवा दिया गया। शंबरासुर से उन पर अनेक प्रकार की माया का प्रयोग करवाया, अंधेरी कोठरी में बंद करा दिया गया। विष पिलाया गया। भोजन बंद कर दिया गया। बर्फ, दहकती हुई आग और समुद्र में फिकवाया गया, आंधी में छुड़वाया गया, पर्वत के नीचे दबा दिया गया, परंतु किसी भी उपाय से प्रह्लाद का बाल भी बांका न हो सका। फिर उससे कहा- रे दुष्ट! जिसके बल पर तू ऐसी बहकी- बहकी बातें कर रहा है, तेरा वह ईश्वर कहां है? वह यदि सर्वत्र है तो इस खंभे में क्यों नहीं दिखाई देता?

तब प्रह्लाद ने कहा- पिताश्री! मुझे तो वह प्रभु खंबे में भी दिख रहे हैं, यह सुनकर हिरण्यकश्यप क्रोध के मारे अपने को संभाल न सका और हाथ में खड्ग लेकर सिंहासन से कूद पड़ा। उसने बड़े जोर से उस खंभे पर एक घूंसा मारा, उसी समय खंभे से बड़ा भयंकर शब्द हुआ। ऐसे जान पड़ा मानो ब्रह्मांड फट गया हो, इतने में ही वहां बड़ी अलौकिक घटना घटी जिसमें हिरण्यकश्यप शब्द करने वाले की खोज कर रहा था उसी समय उसने खंभे के भीतर से निकलते हुए इस अद्भुत प्राणी को देखा। वह सोचने लगा यह न तो मनुष्य है ना पशु फिर यह अद्भुत जीव कौन है? जिस समय हिरण्यकशिप इसी उधेड़बुन में लगा हुआ था, उसी समय करुणा सागर भगवान नरसिंह उसके ठीक सामने ही खड़े हो गए। उनका रूप बड़ा भयंकर था। हिरण्यकश्यप सिंहनाद करता हुआ हाथ में गदा लेकर भगवान नरसिंह पर टूट पड़ा। लीला बिहारी हाथ में गदा लेकर कुछ देर तक उसके साथ युद्ध लीला करते रहे। जिससे हिरण्यकश्यप की आंखें बंद हो गई तब भगवान ने झपटकर उसे उसी प्रकार दबोच लिया जैसे सांप चूहे को पकड़ लेता है। सभा के दरवाजे पर ले जाकर अपनी जांघों पर गिरा लिया और खेल ही खेल में अपने नखों से उसके कलेजे को फाड़ कर पृथ्वी पर पटक दिया। उस समय उनकी क्रोध से भरी आंखों की क्रोध से भरी आंखों की ओर देखा नहीं जा सकता था। उनकी क्रोध पूर्ण भयंकर मुखाकृति को देखकर किसी का भी साहस नहीं हुआ जो निकट जाकर उन्हें प्रसन्न करने की चेष्टा करें तब ब्रह्माजी ने प्रह्लाद से कहा- बेटा तुम्हारे पिता पर ही तो भगवान कुपित हुए हैं अब तुम ही जाकर उन्हें शांत करो। प्रह्लाद जो आज्ञा कहकर भगवान के निकट जा हाथ जोड़ साष्टांग लेट गए। अपने चरणों में एक नन्हे से बालक को पड़ा हुआ देखकर कृपानिधान दयार्द्र हो गए। उन्होंने प्रह्लाद को उठाकर उनके सिर पर अपना कर कमल रख दिया, फिर तो प्रह्लाद को तत्काल परम तत्व का साक्षात्कर हो गया। उन्होंने भावपूर्ण हृदय तथा निर्निमेष नयनों से भगवान को निहारते हुए प्रेमपूर्ण गद्गद् वाणी से भक्त प्रह्लाद द्वारा की गई स्तुति से नरसिंह भगवान संतुष्ट हो गए। उनका क्रोध जाता रहा तब भगवान प्रेम से भरकर प्रसन्नतापूर्वक बोले- भक्त प्रह्लाद तुम्हारा कल्याण हो! मैं तुम पर अत्यंत प्रसन्न हूं, तुम्हारी जो अभिलाषा हो मांग लो। भक्त प्रह्लाद ने कहा- मेरे वरदायक शिरोमणि स्वामी! यदि आप मुझे मुंहमांगा वरदान देना चाहते हैं तो ऐसी कृपा कर दीजिए कि मेरे हृदय में कभी किसी कामना का बीज अंकुरित ही ना हो। यह सुनकर दयासागर नरसिंह भगवान ने कहा- भक्त प्रह्लाद तुम्हारे जैसे एकांत प्रेमी भगत को यदि किसी वस्तु की अभिलाषा नहीं रहती तथापि तुम केवल एक मन्वंतर तक मेरी प्रसन्नता के लिए इस लोक में दैत्य अधिपति के समस्त भोग स्वीकार कर लो। तदनंतर प्रह्लाद ने कहा- दीनबंधु मेरी एक प्रार्थना यह है कि मेरे पिता ने आपको भ्रातृहन्ता समझ कर आपसे और आपका भक्त जानकर मुझसे जो द्रोह किया है उस दुस्तर दोष से आपकी कृपा से मुक्त हो जाएं। तब करुणावलय भगवान ने कहा कि जिसके आप जैसे पुत्र हो उनके लिए मुक्ति पाना नितांत स्वाभाविक है, नरसिंह भगवान ने हिरण्यकश्यप की पवित्रता को प्रमाणित करते हुए प्रह्लाद को उसकी अंत्येष्टि क्रिया करने की आज्ञा दी और स्वयं ब्रह्मा द्वारा की गई स्तुति को सुनकर उन्हें फिर किसी को ऐसा वर देने से मना करते हुए वहीं अंतर्ध्यान हो गए।

-डॉ. राजाराम अग्रवाल
राजकीय महाविद्यालय, भट्टू, फतेहाबाद

धर्मरक्षक प्रह्लादपंथी बिश्नोई समाज

स्वभक्तपक्षपातेन परपक्षविदारणम्।
नृसिंहमदभुतं वन्दे परमानन्द विग्रहम॥

(श्रीमद भागवत 7/1 श्रीधर स्वामीकृत मंगलाचरण)

जिन्होंने अपने भक्त का पक्ष लेकर उसके विरोधी को नष्ट कर दिया, उन परमानन्दस्वरूप अद्भुत नृसिंह रूप धारी भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।

गुरु जम्भेश्वरजी ने जिस पंथ व विचारधारा (वीथिका) का प्रतिपादन किया, वह सार्वकालिक व समृद्वि से परिपूर्ण है। इस पथं का मूल 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' है। इसमें संसार के सभी धर्मों के श्रेष्ठ तत्वों का समावेश है। जीवन जीने का जैसा श्रेष्ठ मध्यम मार्ग, टकराव से बचाव का मार्ग जांभोजी ने सुझाया जिस पर चलकर मुक्ति, मोक्ष निर्वाण, कैवल्य सहज स्वाभाविक रूप में प्राप्त हो जाए। सिक्ख सन्तों ने अत्याचार के विरुद्ध महान खालसा की स्थापना कर धर्मरक्षा की वही कार्य जांभोजी ने बिश्नोई पंथ की स्थापना कर सहज ही सम्पन्न किया। विक्रम की सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में उत्तरी पश्चिमी भारत में इस महान भक्ति आन्दोलन को गति प्रदान करने के लिए, निराशा व कदाचार में डूबे आमजन के हदय को संभालने के लिए, लड़खड़ती भारतीय संस्कृति को सहारा देने के लिए, प्रह्लाद बाड़े के बिछुड़े 12 करोड़ जीवों का उद्धार करने के लिए विष्णु स्वरूप गुरु जाम्भोजी ने विक्रम सम्वत् 1508 (इस्वी सन् 1451) भादों बदी अष्टमी को राजस्थान के वर्तमान नागौर जिले के पीपासर ग्राम में अवतार धारण किया।

गुरु जांभोजी ने अपने महिमामयी व्यक्तित्व, कल्याणाकरी बिश्नोई पंथ और जनभाषा में कथित वेदवाणी से भक्ति आन्दोलन को एक आश्चर्यजनक स्फूर्ति प्रदान की थी। अपने देश-विदेश के विस्तृत भ्रमण और बिना किसी जाति धर्म के भेदभाव के अपने पंथ में इच्छुक लोगों को दीक्षित करके, एक बहुत बड़े भू भाग पर भक्ति आन्दोलन की मंद पड़ती गति को ऊर्जा प्रदान की थी। उन द्वारा प्रवर्तित बिश्नोई पंथ उत्तर भारत का प्रथम संत मत है।

(डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदान और साहित्य प्रथम भाग, पृ. 17) भक्त प्रह्लाद भारतीय जन मानस में सत्य व धर्म की रक्षा के लिए अडिग रहकर अत्याचार का सामना करने वाली अटूट आस्था के प्रतीक जांभाणी पंथ परम्परा में प्रह्लाद चरित्र और जंभावतार सनातन परम्परा का यह सहज उद्रेक ही बिश्नोई पंथ के रूप में मध्यकाल में प्रांजल रूप में प्रकट हुआ।

अन्याय, अत्याचार, अधर्म के खिलाफ जनमानस के विश्वास को दृढता प्रदान करने वाली अवतार परम्परा का यहीं तो आशय है। इस आशयपूर्ति के लिए "वाचा दई प्रह्लाद सूं, सुचेलो गुरु लाजै।" प्रह्लाद सतयुग में हुए तब राम और कृष्ण भी नहीं हुए थे। गुरु महाराज कहते है, मैंने नृसिंह रूप में प्रह्लाद को वचन दिया था। उस वचन को पूरा करने के लिए मैं यहां आया हूँ, वे बारह करोड़ प्रह्लाद अनुयायी (भक्त) यहीं इसी समय जीवन जी रहे है। उनको पंथ पर लाकर उनका उद्धार करने के लिए 'सुरनर तणों संदेशो आयो' के अन्तर्गत मेरा आना हुआ है।

प्रहलाद सुं वाचां कीवां बांरै काजै आया।

प्रह्लाद धर्म पालन में अडिग आस्था के प्रतीक है तो नृसिंहवतार भगवान विष्णु धर्म रक्षकों की रक्षा करने के (कौल निभाने वालों के) भारतीय इतिहास के मध्ययुग में वही परिस्थितियों उत्पन्न हो गई थी जो सतयुग में हिरण्याकश्यपु के धर्मविरुद्ध, अत्याचारी, अन्यायी अहंकारी, दमनकारी शासन के कारण उत्पन्न हुई थीं।

मध्यकाल में विदेशी विधर्मी आक्रान्ता 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' में विश्वास रखने वाली जनता पर हिरण्याकश्यपु की तरह यह थोपने का प्रयास कर रहे थे कि हमारे मत को मानो, हमें मानों। हमें और हमारे भक्तों को न मानने वाला काफिर है। जो काफिर है उस भक्त प्रह्लाद की तरह किसी भी उपाय से नष्ट किया जाएगा।

मजहबी उन्माद में मदान्ध इन शासकों ने तलवार, पुरस्कार, वार, यानी साम, दामए दण्ड, भेद सभी तरीकों से अपने (अधर्म) जोर करने का प्रयास किया। भारतीय समाज टूट रहा था। राष्ट्रीयता के सूत्र कमजोर पड़ रहे

थे। टूटन का कारण अज्ञानता अंधविश्वास, रुढ़िवादिता व भेदभाव का सामाजिक अभिशाप तो था ही परन्तु किसी भी युग में 'सत' का प्रभाव कम जरूर हो सकता है परन्तु अभाव नहीं।

मध्यकाल में भी अच्छा, अच्छाई का पालन करने वाला जनसमुदाय था जो किंचित कर्तव्यविमूढ़ था इस धर्मपरायण वर्ग को ही हम प्रह्लाद के उत्तराधिकारी कह सकते हैं।

भारतीय गैर-मुस्लिम जनता पर जो अत्याचार हो रहे थे, इन हिरण्याकश्यपु रूपी निरंकुश राजाओं से त्राण दिलाने के लिए जम्भावतार होता है। जिस प्रकार प्रह्लाद ने खुद तो कभी आततायियों के सामने हार मानी ही नहीं अन्य को भी धर्म मार्ग पर चलने के लिए तैयार किया। अपने पिता हिरण्याकश्यपु को भी समझाने का भरसक प्रयास किया। तदैव जांभोजी ने अपने समकालीन अनेक शासकों को धर्ममार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने में सफलता पाई। शायद बिश्नोई इसीलिए प्रह्लाद पंथी कहे जाते है कि इन्होंने प्रह्लाद की तरह सब प्रकार से विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म मार्ग को ही वरण किया। अन्यायी और अत्याचार सिर्फ विदेशी विधर्मी शासक ही नहीं कर रहे थे अपितु स्वार्थ और सत्ता से मदान्ध देशी नरेश भी स्वकीय जनता का भांति-भांति प्रकार से शोषण कर रहे थे। विष्णु अवतार जंभेश्वर ने सबको सन्मार्ग पर चलाया। लोदी सुल्तान से लेकर राजपूत राजाओं तक का उनका शिष्यत्व ग्रहण करना यह दर्शाता है कि वे धर्म स्थापना हेतु अपने नये पंथ (प्रह्लाद पंथ) का सृजन कर रहे थे जिसका स्पष्ट आशय यही था कि अन्यायी अत्याचारी सत्ता समाप्त होकर ही रहती है। जंभावतार भारतीय अवतार परम्परा में इसी धारणा को पुष्ट करता है कि प्रत्येक युग में भगवान अपने भक्तों की रक्षा करने के लिए किसी न किसी रूप में अवश्य आते है। दुष्टों का नाश कर पृथ्वी पर सत्य धर्म की स्थापना करते है। 12 करोड़ जीवों का उद्धार करने के लिए ही अर्थात प्रह्लाद की तरह धर्म कर्म में विश्वास रखने वालों की रक्षा के लिए ही अवतार धारण किया।

द्वादस क्रोड़ जु जीव उधारण। भक्त भावना विड़द धारण।
प्रह्लाद भगति प्रतिज्ञा कारण। प्रगटे जंभ जीव निस तारण।

(सन्त साहब राम जी, जंभसार -1 पृष्ठ 339)

प्रह्लाद का चरित्र युगों-युग तक सत्य व धर्म में निष्ठा रखने वालों को सबंल प्रदान करता रहेगा कि अंततः जीत सत्य की होती है। सच्चाई को परेशान किया जा सकता है पराजित नहीं।

मानवाधिकारों की रक्षा का भी यही मूलमंत्र है दुनिया भर में जहां कहीं सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अन्याय भेदभाव व्याप्त है वहां प्रह्लादपंथी वि वास मुक्ति मार्ग का पथप्रदर्शक हो सकता है।

-डॉ. ब्रह्मानन्द
शान्ति नगर, कुरुक्षेत्र

प्रह्लाद स्तुति छन्द

प्रह्लाद की लाज के काज प्रभु, वैकुंठ तजै ततकाल पधारे।
खंभ फाड़े नै सिंघ बणे, अर दुष्ट तणो नख ओदर बिदारे॥
महा तेज भुजा तिहुं लोक धूजा, प्रह्लाद लज्या जन जान उबारे।
उधो दास कह भगवंत नमौ, भौ दूर करण निज संत उधारे॥

-उदोजी अड़ींग

प्रह्लाद गही विष्णु की टेका, हिरणकस्यप व कीयौ बहू धेखा।
तब प्रह्लाद खंब के बांधा, अस्वर खड़ग सीस पर साधा॥
कहां विष्णु अस्वर यूं भाखै, प्रह्लाद विष्णु खंब में दाखै।
फाटत खंब भयो गुंजारा, विष्णु धरे नरसिंह अवतारा॥
पकड़ अस्वर के ओदर बिदारे,दैत मार प्रहलाद उबारै।

-उदोजी अड़ींग, विष्णु चरित

प्रह्लाद की परतंग्या राखी, भगत वछल भगवान।
हीरणाकुस मारयौ दुख दाई, दीयै अमर पद दान॥

-परमानन्दजी वणियाळ

साच पियारो स्याम नै, सिवरो सिरजण हार।
जिण सिंवरे सांसों मिटै, आवागुवण निवार॥
साच बड़ौ संसार मां, साच सरै सब काज।
पांच करोड़ी ले तरयो, सतजुग मां पहराज॥

-केसोजी गोदारा

बिश्नोई लोकगीत

होली के गीत

होळी रे ढांडे ढोर बिकाऊ जायस्या,
ल्यो रावत डोर बहू रे गागरो जी।
कांगी री थारी डोर, कांगो रे गागरो जी ?
पटुड़ै री डोर, रेसम रो गागरो जी।
आटक-आटक सौनैगी साटक, रतन जड़ाऊ,
थारा फूंदा पाट गा जी।
होळी रे ढ़ांडा ढोर बिकाऊ जायस्या,
ल्यो कालू डोर बहू रे गागरो जी।
कांगी री थारी डोर, कांगो रे गोगरो जी ?
पटुड़ै री डोर, रेसम रो गागरो जी।
आटक-आटक, सौनैगी साटक,
रतन जड़ाऊ थारा फूंदा पाट गा जी ॥1 ॥

--00--

डागळिया चढ जाऊं ए, जे कोई दीसै आवन्तो।
जान्वतड़ो बटाऊ, आवन्तड़ो मेरो बीर।
रामू सीरसी चाल रे, काळू आवै लरकतो।
लीली सी तो घोड़ी, घोड़ी गै गळ गुगरा।
बीरा थक्यो है तो जीमी रे, ठंडी छींइयां खजूर गी।
बीरा तीस्यो है तो पीवी रे, कोरो माट घुमार गो।
बीरा भूखो है तो जीमी रे, चावळ सेदयू उजळा।
बीरा लूखा है तो मांगी रे, घी बरताऊ टोकणा।
बीरा फीका है तो मांगी रे, जाला पर ली खांड।
बीरा चट-चट जीमी रे, सासु-नणद लड़ोकड़ी।
बीरा मनै दयली गाळ रे, तनै दयली ओळबो।
बीरा लाल पड़ोसण पूछैरे, थारो बीरो कांई-कांई लायो।
बाई मेंहदी गो कोथलियो रे, मांय कसुम्बा कांजळी।
बाई पहरण नै पोटली रे, ऊपर बोरंग चूंदड़ी।
अतरी करी बीरा सोभा रे, लायो न टकै गी कांजळी ॥2 ॥

--00--

माह गयो फागण आयो, कद आवै ए होळी।
मावड़ी रै रामू लाडलो, अब खेलै ए होली।
हाथ गगरेन गेडियो, माथे आलम टोपी।
कोठै तला कर निसरियो, काने पळक्या एक मोती।
कण थारा सींचा ए मोइया, कण थारा पोया ए मोती ?
मां म्हारी सींचा ए मोइया, भुआ पोया ए मोती।
लोक कह पोतो राव रो, पोतो ए काळू जी रो।
लोक कह भणैजो राव रो, भणैजो ए लालू जो रो।
लोक कह भाई राव रो, भाई ए राजू जी रो ॥3 ॥

--00--

किसो बीरो रात जगावै, किसो खेलै होळी ए ?
होळती गो लसरक टीको, टीकै राची मोळी ए।
रामू बीरो रात जगावै, राजू खेलै होळी ए।
किसो बीरो रात जगावै, किसो खेलै होळी ए ?
होळती गो लसरक टीको, टोकै राची मोळी ए ॥4 ॥

--00--

साभार- बिश्नोई लोकगीत

लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इन्हें संजोकर रखना हमारा दायित्व है। खेद का विषय है कि आज की युवा पीढ़ी लोकगीतों को भूलती जा रही है। माताओ-बहनों से अनुरोध है कि बिश्नोई समाज में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों को कलमबद्ध कर 'अमर ज्योति' को भेजें ताकि उन्हें प्रकाशित कर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।

-सम्पादक

अथक समाजसेवी व जांबाज पुलिस अधिकारी रामसिंह बिश्नोई नहीं रहे

कबीरा जब हम पैदा हुए, जग हँसे हम रोये।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोये॥

यह संसार आवागमन का नाम है। जो इस संसार में आता है उसका जाना निश्चित होता है परन्तु कुछ लोग अपने अच्छे कर्मों के द्वारा अपनी यश रूपी काया पीछे छोड़ जाते हैं जो कभी नष्ट नहीं होती। स्वर्गीय रामसिंह जी बिश्नोई भी एक ऐसे ही इन्सान थे जिन्होंने समाज सेवा के माध्यम से अपना नाम कमाया था। आपका जन्म गांव सदलपुर, जिला हिसार में श्री गोपाल राम जी कालीराणा के घर 10 मई, 1951 को हुआ। गांव में ही प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त आपने 1971 में दयानन्द कॉलेज, हिसार में स्नातक की परीक्षा पास की तथा हरियाणा पुलिस में बतौर ए.एस.आई. सेवा ग्रहण की। वर्ष 1989 में डीएसपी की पदोन्नति हुई तथा वर्ष 1998 से आप बतौर पुलिस अधीक्षक पदोन्नत हुए।

आपने अपनी पूरी पुलिस सेवा निडरता एवं निपुणता से की थी। आपकी गणना हरियाणा में एक ईमानदार एवं जांबाज अधिकारी के रूप में की जाती थी। समय-समय पर आपने आतंकवादियों एवं अन्य समाज विरोधी तत्वों को धूल चटाकर उन्हें पस्त किया था, जिसके लिए आपको सन् 1991 में 'पुलिस पदक', 2002 में 'राष्ट्रपति सेवा पदक' व 2009 में आपको राष्ट्रपति द्वारा 'अति विशिष्ट सेवा पदक' से सम्मानित किया गया था। आपकी विशिष्ट सेवाओं को देखते हुए हरियाणा सरकार ने आपको कई बार नकद पुरस्कार से भी सम्मानित किया था। बतौर पुलिस अधीक्षक सेवा करते हुए आप 31 मई, 2011 को सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के पश्चात भी आपकी क्षमता व योग्यता को देखते हुए हरियाणा सरकार ने आपको पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र, मधुवन में सेवा हेतु आमन्त्रित किया था। हरियाणा पुलिस में आज भी आपके साहस व कार्य के भी उदाहरण दिए जाते हैं।

स्वर्गीय रामसिंह जी पुलिस विभाग में जितने कर्मठ व समर्पित थे, समाजसेवा के क्षेत्र में भी उतने ही लगनशील थे। आप सदैव समाज के कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेते थे। बिश्नोई धर्मशाला कुरुक्षेत्र का निर्माण आपकी समाज सेवा का जीवन्त उदाहरण है। आपने सन् 1994 में बिश्नोई सभा, हिसार के अधीन बिश्नोई सभा, कुरुक्षेत्र का गठन करने के उपरान्त 1995 में कुरुक्षेत्र में समाज के लिए ब्रह्मसरोवर के बिल्कुल समीप तीन कनाल भूमि क्रय की व धर्मशाला निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया। आपके अथक प्रयास व समाज के सहयोग से 1996 में यह भव्य धर्मशाला बनकर तैयार हुई। आपके ही प्रयास से धर्मशाला परिसर में ही नौ कनाल भूमि अलग से बिश्नोई सभा, हिसार के नाम खरीदी गई।

आप द्वारा की गई समाज सेवा का ही परिणाम था कि बिश्नोई सभा, कुरुक्षेत्र के गठन से लेकर मृत्यु पर्यन्त आप उसके निर्विवाद अध्यक्ष रहे। इसके अतिरिक्त आप बिश्नोई सभा, हिसार और अ.भा.बि. महासभा के भी लम्बे समय से सदस्य थे। आपकी समाज सेवा व सूझबूझ का ही परिणाम था कि अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के चुनाव शांतिपूर्वक सम्पन्न हुए। इन चुनावों में आपने मुख्य चुनाव अधिकारी की भूमिका बहुत ही सराहनीय ढंग से निभाई। वस्तुतः अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के चुनाव समाज की अग्नि परीक्षा थी जिसकी सफलता का श्रेय स्वर्गीय रामसिंह जी को जाता है। इसके अतिरिक्त भी समाज के हर कार्य में आपका सदैव सहयोग रहता था।

स्वर्गीय रामसिंह जी 28 जनवरी, 2018 को इस नश्वर संसार को छोड़ गए परन्तु उन द्वारा की गई समाज सेवा की बदौलत वे सदैव याद किए जाते रहेंगे। उनका निधन उनके परिवार के साथ-साथ पूरे समाज की क्षति है। बिश्नोई सभा हिसार, बिश्नोई सभा, कुरुक्षेत्र, अखिल भारतीय महासभा सहित सभी सामाजिक संस्थाओं ने उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट किया है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार श्री गुरु जम्भेश्वर जी महाराज से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दे।

मुक्तिधाम मुकाम फाल्गुन मेला 2018

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की पवित्र भूमि समाधि स्थल मुक्तिधाम मुकाम में इस बार फाल्गुन मेला के शुभ अवसर पर जम्भसार कथा अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा हमेशा की तरह ही सभा स्थल पण्डाल में मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी रामानन्दजी के सान्निध्य में स्वामी कृष्णानन्दजी आचार्य ऋषिकेश द्वारा दिनांक 11 से 14 फरवरी, 2018 तक की गई। जाम्भोजी की अमृतमयी सबदवाणी पर आचार्य जी द्वारा विस्तृत रूप से बताया गया व उनतीस नियम पर चलकर प्रत्येक प्राणी मानव मात्र के कल्याण के लिए कार्य कर सदुपदेश दिया।

मेला व्यवस्था के लिए अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की बैठक 15 जनवरी, 2018 को मुख्यालय मुक्तिधाम मुकाम में माननीय श्री हीराराम भंवाल, अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की अध्यक्षता में हुई। जिसमें मेला व्यवस्था, कानून व्यवस्था, यातायात पार्किंग, बिजली, पानी, चिकित्सा एवं हवन यज्ञ की व्यवस्था पर विस्तृत विचार विमर्श किया। सभी कमेटियों को मेला से पांच दिन पूर्व मुकाम आकर के व्यवस्था सम्भालने का निर्देश दिया।

मेला व्यवस्था की तैयारिया दिनांक 01 फरवरी, 2018 से प्रारम्भ हुई। मेला बाजार, निर्माण कार्य, रिपेयरिंग मेला परिसर, मुकाम, समराथल, पीपासर, सेवकदल हर स्थल का कार्य श्री पूनमचंद लोहमरोड़ ने सम्भाला।

श्री हीराराम भंवाल अध्यक्ष महोदय जी, श्री रूपाराम कालीराणा, श्री रामनिवास बुद्धनगर ने 08.02.2018 को समस्त मेला परिसर की व्यवस्था का जायजा लिया व आवश्यक निर्देश दिया। दिनांक 10.02.2018 तक स्वयं अध्यक्ष जी मुकाम रहे बाद श्री रामनिवास बुद्धनगर, श्री रूपाराम कालिराणा, श्री पुखराज साहू, श्री पूनमचंद लोहमरोड़ ने लगातार मेला तक मेला व्यवस्था का कार्य सम्भाला।

अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल के अध्यक्ष श्री रामसिंह कस्वां, श्री अजमेर गोदारा महासचिव, श्री नरसीराम गोदारा जिला अध्यक्ष श्रीगंगानगर, श्री हंसराज गोदारा फतेहाबाद, श्री सहदेव कालीराणा हिसार, श्री महीराम बेनीवाल बीकानेर, श्री सुल्तान धारणीया हनुमानगढ़, श्री राधेश्याम गोदारा, पंजाब सभी ने दिनांक 12.02.2018 की शाम तक मुकाम सेवकदल सहित कार्य मेला व्यवस्था का प्रारम्भ किया।

दिनांक 13.02.2018 की सुबह मेला व्यवस्था के लिए अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल की बैठक हुई। यातायात पार्किंग बैरियल मन्दिर परिसर, मेला बाजार, भोजनशाला सभी स्थलों पर पुलिस प्रशासन के साथ सेवकदल के प्रभारियों सहित सेवकों की ड्यूटी लगवाई प्रशासन ने मेला व्यवस्था आज सम्भाली।

हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश व राजस्थान के

सांचौर (जालौर), बाड़मेर, जोधपुर, जैसलमेर से श्रद्धालुगण आने प्रारम्भ हुए। कथा स्थल पाण्डाल में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। दिनांक 14.02.2018 की सुबह मेला कंट्रोल रूम, दूध वितरण कक्ष, यातायात बैरियल, सभा स्थल पण्डाल, मन्दिर परिसर, सेवकदल भोजनशाला परिसर सभी स्थलों की सुंदर स्वच्छ व्यवस्था रही।

दिनांक 14.02.2018 अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा प्रबंध कार्यकारिणी की बैठक माननीय श्री हीराराम भंवाल अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की अध्यक्षता में हुई। जिसमें श्री रामस्वरूप मांझू वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री हनुमानसिंह उपाध्यक्ष, श्री विनोद धारणीया महासचिव, श्री सुल्तान धारणीया, श्री सहदेव कालिराणा, श्री सुभाष देहडू, श्री रामस्वरूप धारणीया कोषाध्यक्ष, श्री रूपाराम कालीराणा सचिव, श्री सोमप्रकाश सिगड़ सचिव, श्री वेदप्रकाश कड़वासरा, श्री शंकरलाल माल, श्री रामनिवास बुद्धनगर सभी ने मेला व्यवस्था, कानून, यातायात पार्किंग, हवन यज्ञ, मन्दिर परिसर धोक लगवाने की व्यवस्था, रात्रि जागरण पाण्डाल एवं खुले अधिवेशन कार्यक्रम पर विचार विमर्श किया व महासभा के सभी पदाधिकारियों एवं माननीय सदस्यों के सभी ड्यूटी सेवा के लिए सेवकदल के साथ लगवाने का निर्देश कमेटी अनुसार दिया। आज दिन मेला श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के जयकारों के साथ चलता रहा।

माननीय कुलदीप बिश्नोई, सरंक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा आज शाम 5 बजे जोधपुर से नोखा होते हुए मुकाम पहुंचे। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हीराराम भंवाल व अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के समस्त पदाधिकारियों द्वारा उनका सम्मान स्वागत किया गया। उनके निवास स्थान पर मेला व्यवस्था बाबत विचार विमर्श किया।

शाम 8 बजे फाल्गुन मेला का रात्री जागरण प्रारम्भ 'तारण हार' साखी के साथ श्री सीताराम लोहमरोड़ गायक कलाकार

द्वारा किया गया। स्वामी मनोहरदास, श्री राजूराम स्वामी, डॉ. आचार्य गोवर्धराम जी, सच्चिदानन्द जी आचार्य, स्वामी भागीरथ जी शास्त्री आदि सभी ने श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की वाणी उनतीस नियमों पर चलने का सदुपदेश दिया। मानव मात्र कल्याण का मार्ग बताया। रात्रि मंच संचालन श्री हीरालाल गौदारा सरनाऊ, श्री अनूप गोदारा ने किया। श्रद्धालुओं ने धैर्यपूर्वक पूरी रात सत्संग जागरण का श्रवण किया।

दिनांक 15.02.2018 की सुबह हवन यज्ञ से मुक्तिधाम मुकाम का फाल्गुन मेला महाकुम्भ प्रारम्भ हुआ। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की पवित्र भूमि समाधि स्थल पर 4-5 लाख से अधिक समस्त भारतवर्ष से आये बिश्नोई समाज के श्रद्धालुओं ने घी, खोपरा से हवन यज्ञ में आहुति दी।

सुबह 8 बजे श्री कुलदीप बिश्नोई, सरंक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, श्री हीराराम भंवाल राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने हवन यज्ञ आहुति भगवान दर्शन के बाद अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल परिसर में दानदाता श्री देवेन्द्र बूड़िया द्वारा निर्मित (40×60) टीन शैड का उद्घाटन किया। महासभा व सेवकदल के सभी पदाधिकारियों ने सेवकदल परिसर में उनका स्वागत, सम्मान किया व श्री हीराराम भंवाल राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, श्री रामसिंह कस्वां अध्यक्ष अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल ने महासभा द्वारा सेवकदल परिसर में निर्मित भवनों की व सेवकदल की लंगर सम्बन्धित व्यवस्था की जानकारी दी।

11 बजे बिश्नोई समाज के खुले अधिवेशन सभा स्थल पण्डाल में प्रारम्भ हुआ। अधिवेशन की अध्यक्षता श्री हीराराम भंवाल राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने की। मुख्य अतिथि श्री कुलदीप बिश्नोई सरंक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा व विधायक आदमपुर साथ श्री दुड़ाराम बिश्नोई पूर्व संसदीय सचिव हरियाणा सरकार, श्री पब्बाराम विधायक फलौदी, श्री हीरालाल पूर्व विधायक सांचौर, श्री के.के. बिश्नोई गुड़ामालानी, श्री रामस्वरूप मांझू वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा व अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल के पदाधिकारी गण रहे।

श्री कुलदीप सिंह बिश्नोई, सरंक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने खुले अधिवेशन में कहा कि गुरु जम्भेश्वर भगवान का आशीर्वाद सभी पर रहे। समाज के विकास शिक्षा पर विस्तार से बताया। बिश्नोई समाज हर युवा को आह्वान किया कि ईमानदारी, आत्मविश्वास के साथ मेहनत करें। कार्य करने का दृढ़ संकल्प होना चाहिए। आप सफल जरूर होंगे। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की भूमि गुड़गाँव में धर्मशाला निर्माण कार्य जल्दी प्रारम्भ करवाने का निर्णय व दान दाताओं से दान देने का आह्वान किया। अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल में सेवकदल आवास निर्माण करवाना व समाज में मृत्यु संस्कार पर 16 दिन के पूर्व निर्णय के स्थान पर 12 दिन शोक रखने का निर्णय लिया।

समाज के सभी युवाओं का जिनका चयन IPS - RAS अन्य सेवाओं में हुआ सभी का धन्यवाद किया। रोहित बिश्नोई खिलेरी जो माउंट आबू एवरेस्ट पर जाएगा। समाज की तरफ से शुभकामना व सहयोग का आह्वान किया। दिल्ली धर्मशाला शिक्षण संस्थान में 2 फ्लोर IAS , IPS , RAS की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए रिजर्व करने का निर्णय लिया। शिक्षा के साथ वृक्षारोपण व वृक्षों का सरंक्षण करने का युवाओं से आह्वान किया।

श्री हीराराम भंवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने जेबकतरों का पीछा करते हुए शहीद हुए श्रवणराम बिश्नोई कॉन्स्टेबल राज. पुलिस को श्रदांजलि दी। राज्य सरकार व पुलिस विभाग से शहीद का दर्जा आर्थिक सहायता पैकेज की मांग की। मुकाम मेला पर पधारे सभी श्रद्धालुओं का स्वागत धन्यवाद किया। बिश्नोई समाज के विकास में चौ. स्व. बिश्नोई रत्न भजनलाल का योगदान है। सामाजिक राजनैतिक धार्मिक क्षेत्र में समाज का विकास किया 36 कौम के जनप्रिय राजनेता थे। समाज की मांग अनुसार चौ. बिशनोई रत्न भजनलाल जी का एक स्मारक मुकाम में बनाया जाएगा।

शिक्षा के लिए महासभा का पूर्व निर्णय प्रत्येक जिला मुख्य पर प्रत्येक जिला सभा अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा कोचिंग सेन्टर खोले। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने एक शिक्षा व पर्यावरण के लिए एक अलग कोष की स्थापना की है। सभी भामाशाहों से अनुरोध है अधिक से अधिक दान

इस शिक्षा कोष में दें। श्री हीरालाल पूर्व विधायक सांचौर, श्री पब्बाराम विधायक फलोदी, श्री के.के. बिश्नोई गुड़ामालानी बाड़मेर, श्री दुड़ाराम जी पूर्व संसदीय सचिव हरियाणा, श्री एम. बीरबल साहू हुबली, श्री भागीरथ बेनीवाल प्रधान, श्री हुक्माराम खिचड़ उपाध्यक्ष, श्री मनोहर लाल कड़वासरा, श्री रामसिंह कस्वां अध्यक्ष सेवकदल, श्री गोपाल गौ पालक, बालिका पूजा राहड़ सभी ने शिक्षा व्यवस्था एवं समाज के विकास में सहयोग व सेवकदल व अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के हर कार्य में सहयोग का आह्वान किया। श्री प्रेमसुख आईपीएस, श्री श्यामजी गौदारा RAS, श्री अशोक जी IRS, श्री रोहित खिलेरी समाज के युवाओं के आदर्श रहे। श्री रूपाराम कालिराणा सचिव अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने मंच संचालन किया।

सायं 4 बजे अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा व अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन द्वारा युवा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस शैक्षणिक सेमिनार ने, निश्चित तौर पर बिश्नोई धर्म के युवाओं व उनके माता-पिता के लिए नया अनुभव का अहसास करवा दिया। सफलता को किन संघर्ष की सीढ़ियों से चढ़ कर प्राप्त किया जाता है यह कहानी बयान की उन बिश्नोई धर्म के युवाओं ने जो शब्दों में अपने जज्बातों को शब्दों में बयां करने के लिए पुण्य धरा मुकाम में आए हुए थे। डॉक्टर की पढ़ाई करते हुए किस प्रकार पारिवारिक परिस्थितियों से सामंजस्य बिठाया, यह बयां किया, डॉक्टर सुनीता बिश्नोई ने अपने उद्‌बोधन में। उनके उद्‌बोधन में लगभग आंसुओं की धारा बहने को हुई जब उन्होंने बताया कि किस प्रकार उनके सुसराल के बड़े बुजुर्गों ने सहृदय सहयोग किया और निश्चित ही कभी विचलित न होने के लिए प्रेरित किया।

भारतीय थल सेना से पधारे हुए मेजर अमित गोदारा ने भारतीय सैनिक के अनुशासन की प्रस्तुति देते हुए एक सैनिक अधिकारी की भांति सभी को संयमित और अनुशासनात्मक तरीके से अपनी बातों को जोश भरे अंदाज में बताया। इसी प्रकार अशोक गोदारा जो भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी थे ने अपने आपको एक कठोर अधिकारी की भूमिका में प्रस्तुत करते हुए धर्म में अपने मर्म को उद्वेलित किया। भारतीय रिजर्व बैंक के अधिकारी कैलाश जी ने अपनी शैक्षणिक बातों को एक रूप में उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर युवाओं को शिक्षा में ईमानदारी से आगे बढ़ने के लिए कहा। राजस्थान प्रशासनिक सेवाओं के अन्य अधिकारियों सुनील पंवार SDM, ने ग्रामीण परिवेश के छात्रों को पूरी ईमानदारी से पढ़ने के लिए उत्साहित किया। सोशल सिक्योरिटी ऑफिसर भजनलाल खिलेरी ने पुस्तकों के स्वाध्याय करने के लिए कहा और स्वयं के बनाए हुए नोट्स को बार-बार पढ़ने के लिए सुझाव दिया, RAS 2016 में 135वां रैंक प्राप्त करने वाले सुरेन्द्र सिहाग ने सारगर्भित एवं बारीक बिंदुओं पर अपना उद्‌बोधन देकर अपने से संघर्षों में आने वाली तकलीफों व उनसे किस प्रकार पार पाना होता है, इस पर अपने विचार प्रस्तुत किए। RAS श्यामसुंदर गोदारा ने छात्रों से अपील की कि वे जो भी पढ़ें पूरी तन्मयता से व ईमानदारी से पढ़ें और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर मेहनत करते रहे। भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी प्रेमसुख डेलू ने अपने संघर्ष के दिनों के तौर-तरीकों, अपनी आदतों के बारे में बताकर अपने आपको सामान्य विद्यार्थी के साथ जोड़ने की कोशिश की और ईमानदारी से शिक्षा में, अपने आप से ईमानदार रहते हुए पढ़ने की गुजारिश की और हर संभव यथार्थ उचित कार्य के लिए समर्पित रहने का संकल्प लिया। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के अध्यक्ष हीरा लाल भंवाल ने भी अपना आशीर्वाद दिया और अपने अनुभवों को विद्यार्थी व उनके माता-पिता से साझा करते हुए कहा कि किस प्रकार संयमित भाषा व्यवहार को अपनाया जाए। महासभा के उपाध्यक्ष रामस्वरूप जी मांजू, रूपाराम जी कालीराणा, हनुमान सिंह जी गोदारा, विनोद जी धारणिया, अमर चन्द दिलोईया कर्तव्य-परायण रामनिवास बुद्धनगर आदि वक्ताओं ने अपने अपने अनुभव को साझा किया। अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन के सभी प्रदेशों से पधारे पदाधिकारियों जिसमें कर्नाटक, तेलंगाना, मध्यप्रदेश गुजरात, राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, हरियाणा सभी जगह से बड़ी संख्या में आये हुए थे। युवा संगठन के अध्यक्ष प्रवीण धारणियां ने सभी वक्ताओं का आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा रक्त दान शिविर का आयोजन सफल रहा। जिसमें स्वेच्छा से 285 व्यक्तियों ने रक्तदान किया। रक्तदान प्रभारी अर्जुन सिंह (भरत खेड़ी) जोधपुर, रामनिवास बुद्धनगर, पुखराज साहू, मनोज डेडवा, श्री आसू ढाका, ओम लोल, श्रवण बावरला सभी ने सराहनीय सहयोग रक्त दान के अलावा भी मेला व्यवस्था में किया। खम्मूराम एवं उनकी पर्यावरण टीम ने मेले को साफ-सुथरा पोलिथीन मुक्त रखने में विशेष सहयोग दिया।

इस मेला पर अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल के पदाधिकारी व सेवकों एवं अखिल अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के पदाधिकारी एवं सदस्यों जिन्होंने रात-दिन एक करके सेवा मेला व्यवस्था जहां भी ड्यूटी थी मन्दिर परिसर, पण्डाल सभा स्थल, यातायात पार्किंग, बैरियल, हवन यज्ञ शाला, भोजनशाला परिसर, चढ़ावा गिनती, कंट्रोल रूम दूध वितरण कक्ष, समराथल धोरा, पीपासर, गौशाला सभी का हार्दिक धन्यवाद शुभकामनायें। सराहनीय सेवा से शांतिपूर्ण मेला सम्पन हुआ। पुलिस प्रशासन के अधिकारियों एवं उपखंड अधिकारी मेला मजिस्ट्रेट, बिजली, पानी, चिकित्सा, अग्निशमन, सार्वजनिक निर्माण विभाग, वन विभाग सभी सरकारी अधिकारीयों एवं कर्मचारियों की सेवा बेहतरीन रही इनका भी धन्यवाद।

-विनोद धारणीया , महासचिव
अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा
मुकाम, नोखा, बीकानेर (राज.)

लालासर में जम्भवाणी हरिकथा व युवा सम्मेलन का आयोजन

गुरु जम्भेश्वर भगवान की निर्वाण स्थली लालासर साथरी में गत 8 फरवरी से 14 फरवरी, 2018 तक जम्भवाणी हरिकथा व युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया। लालासर साथरी के महंत स्वामी राजेंद्रानंदजी के सान्निध्य में स्वामी सच्चिदानंद आचार्य ने 6 दिनों तक अपनी मधुर वाणी के माध्यम से सबदवाणी का सरल अर्थ, जीवन में वाणी की उपादेयता, समसामयिक चिंतन व जाम्भाणी कवियों की रचनाओं को विस्तार से वर्णन किया।

जाम्भाणी हरिकथा के अंतिम दिन 14 फरवरी को दोपहर 12.30 से 3.30 तक एक विशाल युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में जाम्भाणी कथाओं की उपयोगिता, युवाओं को रोजगार हेतु प्रेरणा व स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया व साथ ही जीवन के हर दौर में कर्म करने पर बल दिया। युवा सम्मेलन के अगले सभी चरण प्रश्नोत्तर के रूप में चले जिसमें मंच संचालन करते हुए एडवोकेट संदीप धारणियां ने सभी वक्ताओं से समसामयिक प्रश्न पूछे गए जिनका सारगर्भित उत्तर सभी वक्ताओं ने अपने अनुभव के आधार पर दिए। अभी हाल ही में आर.ए.एस. पद पर चयनित श्री श्याम सुंदर गोदारा ने बताया कि जीवन में कोई भी कार्य असंभव नहीं है यदि उस कार्य को करने का जुनून हो और एक ठोस कार्ययोजना तैयार हो, साथ ही स्पष्ट किया कि प्रशासनिक सेवा की तैयारी के दौरान परीक्षार्थी को अपने पास एक विकल्प सदैव रखना चाहिए जिससे तैयारी में भटकाव की स्थिति नहीं पैदा हो।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट डॉ. तपस्या बिश्नोई ने बताया कि रक्षा क्षेत्रों में हमें कक्षा 12वीं के बाद से ही तैयारी शुरू करनी चाहिए और अपनी पसंद के अनुसार अच्छे अंक प्राप्त कर अपने सपनों को साकार करना चाहिए। साथ ही डॉ. तपस्या बिश्नोई ने बिश्नोई समाज को आम आदमी को सस्ती चिकित्सा सुविधा के लिए एक हॉस्पिटल बनाने पर जोर दिया।

आर.ए.एस. अधिकारी श्रीमती प्रियंका बिश्नोई ने बताया कि मेडिकल और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में युवाओं के लिए अपार संभावनाएं हैं और विशेष रूप से समाज की महिलाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे परिवार की इकाई मजबूत हो सके। आर.जे.एस. अधिकारी श्री लक्ष्मण खिचड़ ने बताया कि युवाओं के अच्छे भविष्य के लिए अभिभावकों को उनकी अभिरुचि के आधार पर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए व साथ ही युवाओं के लिए कैरियर सलाह की जरूरत बताई जिससे अध्ययन के उपरांत भटकाव की स्थिति नहीं हो।

जाम्भाणी साहित्य अकादमी के महासचिव डॉ. सुरेंद्र खिचड़ ने बताया कि एक युवा भारत में युवाओं की भूमिका अगले कुछ वर्षों में बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है जिसकी गंभीरता पर समाज की सभी संस्थाओं को विचार कर युगधर्म का पालन करते हुए युवाओं की समस्याओं पर चिंतन व मनन कर समाधान किया जाए। विषय का चयन युवाओं की इच्छा पर हो लेकिन इसमें केवल युवाओं की भूमिका नहीं है बल्कि अभिभावकों की भी है, समाज की भी है, सामाजिक संस्थाओं की भी है इसलिए सभी का यह संयुक्त दायित्व है। इसके साथ ही डॉ. खिचड़ ने जाम्भाणी साहित्य अकादमी व बिश्नोई सभा हिसार के द्वारा युवाओं के लिए जारी गतिविधियों की जानकारियाँ भी दी।

मुंबई से युवा व्यवसायी व सी.ए. सत्येंद्र साहू ने युवाओं के लिए रोजगार हेतु व्यापार के क्षेत्रों का परिचय दिया व साथ ही सोशल मीडिया के संतुलित इस्तेमाल पर बल दिया। सत्येंद्र साहू ने बताया कि समाज के स्तर पर युवाओं को ऐसी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाए जिससे व्यापार हेतु प्राथमिक औपचारिकता पूरी की जा सके। कृषि अनुसंधान अधिकारी डॉ. महेंद्र सहारण ने बताया कि कृषि क्षेत्र में भी युवाओं के लिए सरकारी व प्राइवेट सेक्टर में अपार संभावनाएं हैं जिसके लिए कठिन परिश्रम और धैर्य से निरंतरता आवश्यक है।

आई.पी.एस. प्रेमसुख डेलू ने बताया कि युवाओं को रोजगार व स्वरोजगार के लिए मेहनत को ही सर्वोपरि मानना चाहिए और रोजगार प्राप्ति के पश्चात अपने गांव, कस्बे और शहर के युवाओं को भी प्रेरित करना चाहिए। युवाओं को कड़ी मेहनत करनी चाहिए क्योंकि उनके पास खोने के कम और पाने के सदैव ही अधिक रहता है।

सम्मेलन में श्री प्रवीण धारणियां, भूना; श्री अमरचन्द भीलवाड़ा; श्री किशनलाल अहमदाबाद; श्री रावल ज्याणी, जोधपुर; श्री भागीरथ बैनीवाल, लोहावट; पूर्व विधायक हीरालाल बिश्नोई, समाज सेवी राजाराम धारणियां ने भी अपने विचार रखे।

युवा सम्मेलन के अंत में सम्मेलन के संयोजक स्वामी सच्चिदानन्द आचार्य ने सभी को धन्यवाद दिया और अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में आज के समय में युवाओं को जानने, समझने और उनकी समस्याओं पर गौर करने की जरूरत पर बल दिया व साथ ही भविष्य में इसी प्रकार के अन्य रचनात्मक कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई।

फार्म–4 (देखिए नियम 8)

1.	**प्रकाशन स्थल**	:	हिसार, हरियाणा
2.	**प्रकाशन अवधि**	:	मासिक
3.	**(क) मुद्रक का नाम**	:	डोरेक्स ऑफसैट प्रिंटर्स, हिसार
	(ख) पता	:	न्यू दयानंद ऋषि विहार, डी.एन. कॉलेज रोड, हिसार
4.	**प्रकाशक का नाम**	:	प्रदीप बैनीवाल
	पता	:	प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार हरियाणा
	(क्या भारत का नागरिक है?)	:	हां
	(क्या विदेश है तो मूल देश है)	:	--
5.	**सम्पादक का नाम**	:	डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई
	पता	:	कार्यालय, 'अमर ज्योति' श्री बिश्नोई मंदिर, हिसार, हरियाणा
	(क्या भारत का नागरिक है?)	:	हां
	(क्या विदेश है तो मूल देश)	:	--
6.	**उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रशित से अधिक के सांझेदार या हिस्सेदार हों।**	:	बिश्नोई सभा, हिसार

मैं प्रदीप बैनीवाल एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रदीप बैनीवाल
प्रधान, बिश्नोई सभा,
हिसार–125 001 (हरियाणा)

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2074 चैत्र की अमावस्या

लगेगी-16.03.2018, शुक्रवार, सायं 6.17 बजे

उतरेगी-17.03.2018, शनिवार, सायं 6.41 बजे

मेला: 17.03.2018- लोदीपुर, जाम्भोलाव, सोनड़ी

सम्वत् 2075 वैसाख की अमावस्या

लगेगी-15.04.2018, रविवार प्रातः 8.37 बजे

उतरेगी-16.04.2018, सोमवार, प्रातः 7.26 बजे

सम्वत् 2075 ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी-14.05.2018, सोमवार सायं 7.46 बजे

उतरेगी-15.05.2018, मंगलवार सायं 5.17 बजे

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2017-2019
L/WPP/HSR/03/17-19

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

GURU JAMBHESHWAR SR. SECONDARY SCHOOL

ADMISSION OPEN
Nur. to 10+1 (Science, Commerce, Arts)

Facilities

- Smart Classes
- Transport Services
- R.O. Water-Coolers
- Well Established Library
- High Quality Teaching Methods
- Nature Friendly Campus
- Clean Washrooms
- Well Furnished & Spacious Classrooms
- Modern Laboratory System
- Whole Campus Fitted with CCTV Cameras

Jawahar Nagar, Hisar-125001 (Haryana)

✆ 8168758606, 8607918253, 9812108255 ✉ gurujambheshwar029@gmail.com

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 मार्च, 2018 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।